इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
पर्यटन एवं आतिथ्य प्रबंध विद्यापीठ

बी.टी.एम.सी.-131

पर्यटन का इतिहास-I

खंड

3

प्राचीन सभ्यताएँ

इकाई 7
प्राचीन सभ्यताएँ : सामाजिक दशाएँ और पर्यटन 5

इकाई 8
प्रारम्भिक साम्राज्यों का उत्थान और पतन 17

इकाई 9
बैजन्तिया (बिजेण्टाइन), ईसाई और इस्लामी सभ्यताएँ 31

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें और शोध पत्र 49

इस खंड के लिए गतिविधियाँ 50

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम तैयार करने वाली सह पाठ्यक्रम–अनुकूलन टीम

प्रो. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
निदेशक
एसओटीएचएसएम, इग्नू, (अध्यक्ष)

सुश्री तांगजाखोम्बी अकोइजम
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम
इग्नू

डॉ. परोमिता शुक्लाबैद्या
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम
इग्नू

डॉ. अरविन्द कुमार दुबे
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम
इग्नू (संयोजक)

डॉ. सोनिया शर्मा
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम, इग्नू

कार्यक्रम समन्यवक : डॉ. अरविन्द कुमार दुबे

खण्ड समन्यवक	पाठ्यक्रम समन्यवक
डॉ. अरविन्द कुमार दुबे सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम	डॉ. अरविन्द कुमार दुबे डॉ सोनिया शर्मा

शिक्षक गण

डॉ. हरकीरत बेंज
एसोसिएट प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम

प्रो. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
निदेशक

डॉ. सोनिया शर्मा
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम

डॉ. परोमिता शुक्लाबैद्या
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम

सुश्री तांगजाखोम्बी अकोइजम
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम

डॉ. अरविन्द कुमार दुबे
सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम

पाठ्यक्रम निर्माण

इकाई संख्या	इकाई लेखक
7, 8, 9	**डॉ. अरविन्द कुमार दुबे, सहायक प्राध्यापक, एसओटीएचएसएम, इग्नू** **डॉ. अमित कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, सिक्किम विश्वविद्यालय**

अनुवादक	वर्तनी शोधन एवं पुनरिक्षण	सहायक
श्री प्रांजल धर, कवि मीडिया विशेषज्ञ, अनुवादक न्यू राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली	डॉ. सुरेश कुमार गोहे	श्री विनीत ज़ेस जेएटी, एसओटीएचएसएम इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण दल

श्री तिलक राज सहायक कुल सचिव (प्रकाशन) एम.पी.डी.डी.,इग्नू, नई दिल्ली	श्री यशपाल अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन) एम.पी.डी.डी.,इग्नू, नई दिल्ली

सितम्बर, 2019

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, 2019

ISBN : 978-93-89499-32-2

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (चक्र मुद्रण) द्वारा या अन्यथा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के बारे में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी नई, दिल्ली – 110068 स्थित कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से कुल सचिव एम.पी.डी.डी इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेज़र टाइपसेटर : टेसामीडिया एण्ड कंप्यूटर्स, सी–206, ए.एफ.ई.2, जामिया नगर, नई दिल्ली

मुद्रक : मैसर्स ए–वन ऑफसेट प्रिंटर्स, 5/34, कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली–110015 द्वारा मुद्रित।

खंड 3 प्राचीन सभ्यताएँ

इस खंड में हम प्राचीन सभ्यताओं, चीन की सभ्यताओं, बैजन्तिया (Byzantine), ईसाई और इस्लामी सभ्यता तथा प्रारम्भिक साम्राज्यों के उत्थान और पतन आदि में मुद्दों और पर्यटन की सामाजिक अवस्था के बारे में चर्चा करने जा रहे हैं।

इकाई 7 पर्यटन की अभिवृद्धि, कृषि की भूमिका, प्राचीन काल में सामाजिक समालोचना और धर्म के प्रकार्यों के बारे में चर्चा करती है। प्राचीन सभ्यताओं को समझने के लिए, इकाई चीन के विविध राजवंशों और उनसे सम्बन्धित विकास के बारे में भी चर्चा करती है।

इकाई 8 का प्रारम्भ साम्राज्य की समझ के साथ और पृथ्वी के अलग-अलग क्षेत्रों में प्रारम्भिक साम्राज्यों के उत्थान और पतन की विस्तृत समझ के साथ होता है। इकाई प्रारम्भिक सभ्यताओं के योगदान और उनकी विलक्षणता के बारे में भी संक्षिप्त चर्चा करती है।

इकाई 9 में हमने बैजन्तिया (Byzantine) के तात्पर्य और मानवता के प्रति उसके योगदान पर चर्चा की है। इसके अतिरिक्त, ईसाई सभ्यता और इसके विस्तृत अभिलक्षणों पर भी प्रकाश डाला गया है। इन सबके अलावा, इस्लामी सभ्यता के उदय और इसके विस्तार पर भी चर्चा की गयी है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 7 प्राचीन सभ्यताएँ : सामाजिक दशाएँ और पर्यटन

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 सामाजिक दशाएँ और पर्यटन

- 7.2.1 पर्यटन का विकास
- 7.2.2 कृषि की भूमिका
- 7.2.3 सामाजिक विभाजन
- 7.2.4 धर्म की भूमिका

7.3 चीन

- 7.3.1 ज़िया (Xia) राजवंश
- 7.3.2 शांग (Shang) राजवंश
- 7.3.3 चाऊ (Zhou) राजवंश
- 7.3.4 चिन (Qin) राजवंश
- 7.3.5 हान (Han) राजवंश
- 7.3.6 जिन (Jin) राजवंश
- 7.3.7 व्यापार और वाणिज्य
- 7.3.8 चीन की महान दीवार

7.4 सारांश

7.5 शब्दावली

7.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप इस योग्य हो जाएँगे कि आप :

- सभ्यता का तात्पर्य बता सकें और इसकी विशिष्टताओं का वर्णन कर सकें;
- पर्यटन के विकास में कृषि, समाज और धर्म की भूमिका का गुण-विवेचन कर सकें; और
- उन विभिन्न राजवंशों के बारे में जान सकें जिन्होंने चीन, जो कि प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, पर शासन किया।

7.1 प्रस्तावना

सभ्यता का तात्पर्य भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और बहुत सारे अन्य घटकों के अन्तर्संबंधित और अंतर्निर्भर संजाल पर आधारित जटिल समाजों से है, जिनके कुछ सामान्य (Common) अभिलक्षण होते हैं। ऑक्सफोर्ड हैण्डबुक के अनुसार :

"सभ्यता का तात्पर्य एक प्रक्रिया और एक गन्तव्य, दोनों, से है। यह एक समाज के सामूहिक रूप से सभ्य होने अथवा प्राकृतिक अवस्था, जंगलीपन या बर्बरता से सभ्यता की अवस्था की तरफ उसके आगे बढ़ने की प्रक्रिया का वर्णन करता है। यह मानव समाज की उस

स्थिति का वर्णन करता है, जिसके लक्षण हैं – उल्लेखनीय नगरीकरण, सामाजिक और पेशेवर स्तरीकरण, अवकाश के समय की विलासिता, और इसी अनुरूप कला व विज्ञान के क्षेत्र में होने वाली उन्नति। प्रचलित मानकों के अनुसार विवेकपूर्ण जटिल सामाजिक-राजनीतिक संगठन-निर्माण और स्व-शासन की क्षमता को बहुत लम्बे समय से सभ्यता की एक केन्द्रीय आवश्यकता माना जाता रहा है।"

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर हम देख सकते हैं कि बिल्कुल प्रारम्भ में सभ्यताएँ भौगोलिक रूप से उन स्थानों पर अस्तित्वमान हुईं जो कृषि-ढाँचे के अनुकूल थे। आवश्यक फसलों के उत्पादन के लिए कृषिगत व्यवस्थाओं पर लोगों की निर्भरता के कारण जब उत्पादन अधिशेष होने लगा तो लोगों को यह अवसर मिला कि वे गैर-कृषि कार्यों में स्वयं को संलग्न कर सकें और शिल्पकारी में विशेषज्ञता हासिल कर सकें। इसके कारण राज्य और सरकारों के उद्‌भव को बल मिला। राज्य और सरकारों ने कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए नियम और नीतियाँ बनायीं ताकि सामाजिक श्रेणीतन्त्रों को कायम रखा जा सके और वृहत्तर समुदायों पर शक्ति का विनियमन किया जा सके। धीमे-धीमे विभिन्न ऐसे पेशे उभरे जिनमें संलग्न होकर लोगों ने उत्पादन में बढ़ोत्तरी की, उत्पादित वस्तुओं के व्यापार के कारण सामाजिक स्तरीकरण और सन्तुष्टि का मार्ग प्रशस्त हुआ। शीघ्र ही, लिखने के लिए प्रतीकों का आविष्कार किया गया ताकि संचार किया जा सके, अभिलेखों को सँजोने लायक बनाया जा सके और न्याय व कानून को संहिताबद्ध किया जा सके। जब सृजनात्मक रुझान को प्रोत्साहित किया गया तो लोगों ने लिखा और उसे सँजोया और इस प्रकार कला और संस्कृति को समृद्ध बनाने वाले साहित्य का जन्म हुआ।

ये जटिल समाज विशाल सभाओं या समूहों की शक्ल में प्रमुख नदी घाटियों के आसपास सभ्यताओं के रूप में उभरे। इन नदी-घाटियों के आसपास की मिट्टी फसलोत्पादन हेतु बहुत उपजाऊ थी और इन नदियों ने परिवहन के लिए एक साधन का भी कार्य किया। इस प्रकार विश्व की प्रमुख प्राचीन सभ्यताओं में से कुछ सभ्यताओं पर, उनकी सामाजिक दशाओं और अभिलक्षणों पर, उनकी प्रगति, उत्थान और उनके पतन पर एक दृष्टि डालने से विद्यार्थियों को इन सभ्यताओं को बेहतर तरीके से समझने में सुविधा होगी।

7.2 सामाजिक दशाएँ और पर्यटन

"पर्यटन एक सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिघटना है जिसमें व्यक्तिगत अथवा व्यापारिक/पेशेवर उद्देश्यों हेतु लोगों द्वारा अपने सामान्य वातावरण से बाहर किन्हीं देशों या स्थानों की तरफ किया जाने वाला संचलन शामिल रहता है। संचलन करने वाले इन लोगों को यात्री (Visitor) कहा जाता है (ये यात्री पर्यटक अथवा सैर-सपाटा करने वाले लोग हो सकते हैं; निवासी अथवा अनिवासी हो सकते हैं) और पर्यटन का सम्बन्ध इन्हीं की गतिविधियों से होता है। इनमें से कुछ गतिविधियाँ पर्यटन व्यय की ओर संकेत करती हैं" (संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन, 2008)।

पर्यटन की उपरोक्त परिभाषा में सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संलग्नता से सम्बद्ध विभिन्न प्रकार के लोग और गतिविधियाँ शामिल हैं। निर्धारित लक्ष्य और उद्देश्य के साथ किए जाने वाले सुविधाओं के प्रावधान इनसे जुड़े रहते हैं। पर्यटन शब्द अंग्रेजी के टूरिजम (Tourism) शब्द का समानार्थ माना गया है और टूरिजम शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के "Tornos" शब्द से मानी गयी है, जिसमें गति या संचलन का तत्व सम्मिलित है। यहाँ विशेष जोर सीमाओं के आर-पार की जाने वाली यात्राओं पर है जिनमें विभिन्न सभ्यताओं और समाजों के बीच संचार के लिए अवसर उपलब्ध कराने की संभावनाएँ निहित रहती हैं। इससे पर्यटन का विकास विस्तृत होकर सम्पूर्ण विश्व में की जाने वाली एक ऐसी गतिविधि

के रूप में सामने आता है जो किसी भी सभ्यता की सामाजिक, राजनीतिक, विचारधारात्मक और सांस्कृतिक परिसीमाओं से परे होती है। शीघ्र ही, पर्यटन ने स्वयं को संचार और सामाजिक विकास के एक माध्यम के रूप में तथा विभिन्न सभ्यताओं में मनुष्यों के ज्ञान और उनकी समझ के दायरों को विस्तृत करने वाले एक माध्यम के रूप में स्थापित कर लिया।

7.2.1 पर्यटन का विकास

जिन विभिन्न कारणों और सामाजिक दशाओं ने पर्यटन के विकास को आगे बढ़ाया, उन्हें समझने के लिए निम्नलिखित घटनाएँ सहायक होंगी। पहिये की खोज ने सभ्यता को आगे बढ़ने और विकसित होने का बल प्रदान किया। लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर गए क्योंकि मौसमों में परिवर्तन हुआ, मवेशी और जानवर इधर से उधर गए, लोगों ने अपना अस्तित्व बचाने के लिए यात्राएँ कीं। चूँकि प्रारम्भिक यात्रियों ने अपनी यात्राएँ पैदल चलकर कीं, इसलिए उन्होंने अपेक्षाकृत छोटे समाजों का निर्माण किया। ये छोटे-छोटे समाज छोटे-छोटे भौगोलिक क्षेत्रों तक ही सीमित थे, जहाँ लोग खेती कर सकते थे और उत्पादन के लिए फसल उगा सकते थे। ज्यों-ज्यों लोगों की आवश्यकताएँ बढ़ीं, व्यापार और व्यवसाय की आवश्यकता ने जन्म लिया जिसके कारण निवासियों को सीमाओं के पार जाना पड़ा और दूरदराज के स्थानों की यात्राएँ करनी पड़ीं। अज्ञात को जानने की उनकी जिज्ञासा और खोज ने उन्हें पर्वतों पर चढ़ने के लिए, नदियों को पार करने के लिए और अनदेखे क्षेत्रों व इलाकों की एक झलक पाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार प्रारम्भिक पर्यटन का जन्म हुआ।

यात्रा और पर्यटन की उत्पत्ति की खोज में इतिहास के पन्ने मिस्र, पूर्वी-भूमध्यसागरीय और रोमन साम्राज्यों के उत्थान तक जाते हैं। कोस्टा रिका के आसपास; जिसका काल उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य का है; लोगों की गति और संचलन ने तथा भोजन, आवास और परिवहन की सुविधाओं की खोज ने यात्रा करने की आवश्यकता को जन्म दिया। यहीं से पर्यटन की उत्पत्ति का प्रारम्भ हुआ। विशेषज्ञों के अनुसार, मध्य काल में लोगों के पास खाली समय और प्रगतिशील परिवहन की आधारभूत संरचना उपलब्ध थी, जिसके कारण वे यात्रा करने और अपने समय का उपयोग करने के लिए सक्षम हुए। व्यापार और वाणिज्य के अतिरिक्त, प्राचीन सभ्यताएँ इस बात के साक्ष्य उपलब्ध कराती हैं कि धर्म, खेलकूद, स्वास्थ्य, शिक्षा, अवकाश, आराम और आध्यात्मिक रुझानों की अभिप्रेरणाओं ने लोगों को पर्यटन की गतिविधियों में संलग्न किया। इस परिघटना की गहरी समझ के लिए चूँकि प्रत्येक समाज और उसके इतिहास के साथ समेकित उसकी अपनी संस्कृति विभिन्न कारण उपलब्ध कराती है, इसलिए पर्यटन की संवृद्धि और उसके विकास का मार्ग प्रशस्त करने वाली सामाजिक दशाओं का ज्ञान और उनकी समझ पर्यटन के मूल तत्वों का गुण-विवेचन करने की कुंजी है।

अनेक कारणों से सभ्यता की संकल्पना को समझना जटिल हो जाता है। सभ्यता की परिभाषाएँ अलग-अलग हैं, विशेषज्ञों के मत अलग-अलग हैं और अनेक सिद्धान्त हैं जो पदों को अलग-अलग कोणों और परिप्रेक्ष्यों से परिभाषित करते हैं। सामाजिक संरचना, वर्गों के विभाजन या सामाजिक पिरामिडों के बिना किसी सभ्यता की कल्पना करने का प्रयास निरर्थक ही होगा। यह संरचना वास्तव में ऐसी बुनियाद होती है जो किसी सभ्यता के आगे बढ़ने के लिए आधार उपलब्ध कराती है। इस संरचना के बिना पूरी व्यवस्था ही अस्त-व्यस्त होकर बिखर जाएगी। यह सामाजिक व्यवस्था किसी भी सभ्यता में श्रम के विभाजन, संसाधनों के आबंटन, उत्तरदायित्वों के प्रत्यायोजन और कार्य के प्रभावी निष्पादन के लिए एक प्रणाली उपलब्ध कराती है ताकि वह सभ्यता संगतिपूर्ण तरीके से कार्य कर सके और किसी शहर में चयनित सरकार के अन्तर्गत रहने वाले लोगों की संचयी संवृद्धि सम्भव हो सके।

7.2.2 कृषि की भूमिका

प्रारम्भ में कृषि-योग्य भूमियों ने लोगों को आकर्षित किया और इसका परिणाम एकजुट होकर रहने वाले छोटे-छोटे समुदायों के निर्माण के रूप में सामने आया। फसल के अधिशेष उत्पादन के कारण कुछ लोगों को विभिन्न दूसरे व्यवसायों में संलग्न होने का अवसर मिला जिसके चलते सामाजिक संरचना में स्पष्ट विशेषीकृत भूमिकाओं और अलग-अलग वर्गों का मार्ग निर्मित हुआ। चूँकि कृषि-कार्य में काम करने वाले लोगों की विशाल संख्या आवश्यक थी, इसलिए इन अलग-अलग वर्गों में आपसी सहयोग की आवश्यकता पड़ी ताकि फसलें उगाने के लिए खेतों में दक्षतापूर्वक कामकाज किया जा सके, सिंचाई प्रणालियों का निर्माण किया जा सके, स्मारकों का निर्माण किया जा सके और अनेक ऐसी परियोजनाओं पर काम किया जा सके जिनके लिए नेतृत्व और मुखिया की आवश्यकता पड़ती है। इन नेतृत्वकारी लोगों का एक नया सामाजिक वर्ग बना। इन समुदायों के लोगों ने ज्यों-ज्यों विकास करना शुरू किया, त्यों-त्यों गाँव अस्तित्व में आए और बाद में इन्हीं गाँवों में से शहर उभरे। शहरों की उपस्थिति समस्त प्रारम्भिक सभ्यताओं की उपस्थिति को चिह्नित करती है। आधारभूत संरचना और संसाधनों को उपलब्ध करवाकर इन शहरों ने लोगों को मिलकर और व्यापार में कार्य करने के लिए आमन्त्रित किया। चूँकि गाँवों और अपेक्षाकृत छोटे समुदायों से लोग व्यापार और वाणिज्य के लिए शहरों में आए थे इसलिए ये शहर गति और संचलन के केन्द्र बन गए। जनसंख्या के अपेक्षाकृत अधिक होने और आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए इन शहरों के लिए यह आवश्यक हो गया कि यहाँ लोगों को आपस में मजबूती से जोड़ने वाले तथा कार्य, शान्ति एवं कानून और व्यवस्था के लिए एकता का बोध उत्पन्न करने वाले एक केन्द्रीकृत राज्य की छतरी के नीचे राजनीतिक नेतृत्व हो; सरकार, धर्म और भाषा की साझा सामान्य संस्थाएँ हों। इस राज्य ने वृहत्तर शहरों या समुदायों पर, सरकार के नाम से जानी जाने वाली, एक अकेली राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत शासन किया। इस राजनीतिक व्यवस्था को प्रारम्भिक सभ्यताओं के उत्थान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है।

सामान्य तौर पर जब हम सभ्यताओं की बात करते हैं तो हमारे मन में साम्राज्यों, पत्थर की विशालकाय दीवारों, सुनहरे और चमकते स्थापत्य से युक्त स्मारकों और सशक्त भौतिक आधारभूत संरचना के साथ-साथ शानदार सड़कों का चित्र उभरता है। वृहत्तर समुदायों के प्रबन्धन और प्रशासन में सुविधा के लिए इस भौतिक आधारभूत संरचना के सटीक पूरक के रूप में सामाजिक आधारभूत संरचना की रचना की गयी तथा आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक संस्थाओं का अभिकल्पन (डिज़ाइन) किया गया, जिससे नया सामाजिक श्रेणीतन्त्र सृजित हुआ। इन श्रेणीतन्त्रों में अनेक ऐसे लोगों को स्थान मिला जिन्हें अपने कौशल और अपनी व्यावसायिक भूमिकाओं में विशेषज्ञता हासिल थी; जैसे – नेता, मन्त्री, किसान, शिल्पकार, दुकानदार, व्यापारी और आध्यात्मिक नेता। पुनश्च, बाहरी सभ्यताओं के साथ बढ़े हुए व्यापार और संघर्षों के कारण शहरों को प्रशिक्षित राजनयिकों, सेनाओं और केन्द्रीकृत शासकों और इनमें संलग्न लोगों की आवश्यकता पड़ी। इस प्रकार, इस सामाजिक संरचना ने किसी भी संगठन के अस्तित्वमान बने रहने के लिए कार्यकरण के प्रमुख आधार का काम किया। किसी सभ्यता के अंगों का निर्माण करने वाले विभिन्न घटकों और अभिलक्षणों के बारे में विशेषज्ञों के मत अलग-अलग हैं। पश्चिमी अफ्रीका की नाइजर नदी घाटी में निवास करने वाले नागरिकों का उदाहरण कृषि-उत्पादन के अधिशेष और विशेषीकृत श्रम के साथ नगरीकरण से सम्बन्धित है। हालाँकि यहाँ के लोगों ने कभी भी सशक्त सामाजिक श्रेणीतन्त्रों, राजनीतिक संरचनाओं और संहिताबद्धीकरण या लिखित भाषा की व्यवस्था को कायम नहीं किया। इस कारण विशेषज्ञ इसे एक सभ्यता मानने से असहमत होते हैं। इसके अतिरिक्त, व्यापक सांस्कृतिक आदान-प्रदान और तकनीक के प्रसार के कारण विशेषज्ञों के

सामने उस विभाजक रेखा को खींचने की चुनौती खड़ी हो जाती है, जो बता सके कि एक सभ्यता कहाँ पर समाप्त होती है और दूसरी कहाँ से प्रारम्भ। इस प्रकार, एकीकृत राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जड़ों से युक्त सामाजिक संरचना प्रमुख प्राचीनतम सभ्यताओं के अंग की निर्मिति करती है और इस प्रकार पर्यटन के सम्बन्ध में ये सन्दर्भ-बिन्दु बन जाती हैं।

7.2.3 सामाजिक विभाजन

अधिकतर सभ्यताओं में सामाजिक विभाजन जिन मापदण्डों पर आधारित था, उन पर विचार करते हुए हम पाते हैं कि योग्यता, कौशल और सौंपे जाने वाले दायित्व महत्वपूर्ण मापदण्डों में शामिल थे। राजवंश में राजा, फैरो अथवा शासक उच्चतर स्तर में सम्मिलित था, जैसाकि सिन्धु घाटी, मिस्र और चीन की सभ्यताओं में व्याख्यायित किया गया है। यह वर्ग उच्चतम कोटि की शक्ति और सम्प्रभुता का प्रतिनिधित्व करता है। ये बुद्धिमत्ता और प्रतिभा से युक्त लोग हैं, जिन्होंने लोगों पर शासन किया, लोगों की बेहतर संवृद्धि और उनके विकास के लिए अपने विवेक का उपयोग किया और बेहतर निर्णय लिए। इनमें वृद्धि करते हुए विज्ञान, कला और प्रतिभा में दक्ष ऐसे लोगों का वर्ग आता है जो राजा की मन्त्रिपरिषद का हिस्सा होते थे और सरकार को सर्वाधिक सफल तरीके से चलाने के लिए नियमों व नीतियों के निर्माण में राजा की सहायता किया करते थे।

इस तरीके की सामाजिक संरचना की अनुपस्थिति में अर्थात् लोगों के रक्षक के बिना या शासक अथवा राजा के रूप में किसी नेता के अभाव में लोगों का प्रबन्धन करना और उन्हें सुरक्षा प्रदान करना बहुत कठिन था। कानून न होने पर ऐसी व्यवस्था में अराजकता फैल जाती। हालाँकि, यदि राजा पर नियन्त्रण न लगाया जाता, तो अपनी विशिष्ट शक्तियों का प्रयोग करते हुए वह मनमाने आदेश दे दिया करता। यदि विनियमन न किया जाता, तो दास और श्रमिक अपने ही शासकों के विरुद्ध खड़े होकर विद्रोह कर सकते थे, व्यापारी और विक्रेता अपनी वस्तुओं को बेचते ही नहीं और पुजारी राजगद्दी हथियाने और साम्राज्य पर शासन करने के लिए लड़ाई शुरू कर सकते थे।

7.2.4 धर्म की भूमिका

अधिकतर प्राचीन सभ्यताओं के पास अपने-अपने धर्म थे जिन्होंने सामाजिक एकता का सृजन किया। यह धर्म अस्तित्व के अर्थ और ईश्वर की संकल्पना की व्याख्या करने वाले विश्वासों, संस्कारों, परम्पराओं और व्यवहारों की एक व्यवस्था पर आधारित था। आस्थाओं और प्रथाओं में चूँकि लोगों की साझेदारी थी, इसलिए लोगों ने शहरों की सीमाओं को पार किया, दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कीं और ऐसे लोगों से मिले, जिन्हें वे जानते तो नहीं थे लेकिन जिनके साथ अपने धार्मिक उत्सवों और सम्पर्क-सूत्रों के माध्यम से वे एक सामान्य भावभूमि की खोज कर सकते थे और आपसी विश्वास और आदर का निर्माण कर सकते थे। सभी धर्मों में यह साफ तौर पर देखा गया कि राजनीति और धर्म का सम्बन्ध बहुत जटिल है। कुछ राजनीतिक नेताओं ने भी अपने धार्मिक मोर्चे का प्रतिनिधित्व किया और इस प्रकार उन्होंने धार्मिक नेताओं के रूप में कार्य किया। प्राचीन मिस्र में फैरो ने स्वयं को ईश्वर के अवतार के रूप में प्रस्तुत किया। वे साम्राज्य पर राजा की तरह शासन करते थे और इसके साथ-साथ वे अपने धर्म के प्रतिनिधि भी थे।

इन राजनीतिक और धार्मिक नेताओं ने साथ-साथ मिलकर सामाजिक श्रेणीतन्त्रों को मजबूत बनाने में योगदान दिया। कानून, नीति-निर्माण और युद्धों से सम्बन्धित निर्णयों के लिए राजनीतिक नेता ज़िम्मेदार थे। ये निर्णय समस्त समाजों पर प्रभाव डालते थे। ईश्वर की संकल्पना की व्याख्या करने, इसका तात्पर्य बताने और नागरिकों के जीवन में इसकी

प्रासंगिकता को व्याख्यायित करने का दायित्व धार्मिक नेताओं का था। उनकी प्रस्थिति अत्यन्त प्रशंसित थी क्योंकि, जैसा चित्रित किया गया है, अकेले वे ही थे जो किसी समाज और इसके देवताओं के बीच संचार कर सकते थे और नागरिकों को उनके कल्याण के लिए उपदेश देते थे।

राजनीतिक नेताओं के अतिरिक्त शिल्पकार उस स्तर से सम्बन्धित थे जो वस्तुओं और सेवाओं को उपलब्ध कराने के लिए ज़िम्मेदार था तथा व्यापारी थे जो इन वस्तुओं के व्यापार में संलग्न रहते थे। श्रमिक निम्न वर्गों से सम्बन्धित थे और कभी-कभार उन्हें दासों के रूप में वर्गीकृत कर दिया जाता था। वे कुछ विशेषीकृत कार्य करते थे; जैसे - माल लादना और उतारना, शहर की साफ-सफाई करना। ये सभी वर्ग एक साथ मिलकर एक जटिल सामाजिक संरचना की निर्मिति करते थे और उत्पादन तथा शहरों की संवृद्धि और विकास में अपना योगदान देते थे।

बोध प्रश्न 1

1) "सभ्यता" से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्राचीन काल में पर्यटन की संवृद्धि का मार्ग प्रशस्त करने वाले कारण और सामाजिक दशाओं की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

7.3 चीन

चीन की सभ्यता प्राचीन विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। इस सभ्यता का एक इतिहास है जो चीन के सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कारकों को स्पष्ट करता है। अपनी इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण यह राष्ट्र वर्तमान विश्व में एक प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में खड़ा है। इसके इतिहास की जड़ें वर्तमान समय से चार हजार वर्ष पूर्व तक जाती हैं। एशिया महाद्वीप के पूर्वी हिस्से में स्थित चीन विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है।

चीन के इतिहास के पन्ने उन शक्तिशाली परिवारों के बारे में जानकारी देते हैं, जिन्हें राजवंश कहा जाता है और जिन्होंने इस राष्ट्र पर शासन किया। शांग राजवंश सबसे पहले आता है और चिंग (Qing) राजवंश सबसे अन्त में। चीन की सभ्यता का इतिहास अतीत में येलो नदी के जलग्रहण क्षेत्र तक जाता है, जहाँ पर पहले ज़िया, शांग और चाऊ राजवंशों

की गद्दी की घोषणा की गयी थी। पारम्परिक ज्ञान के अनुसार ज़िया (Xia) चीन का प्रथम आनुवांशिक राजवंश था, हालाँकि इतिहासकार शांग को परम्परानुसार पहला राजवंश मानते हैं। पारम्परिक ज्ञान के अनुसार, जब अन्तिम ज़िया सम्राट को अत्याचारी शासन के कारण निष्कासित कर दिया गया तो ज़िया गायब हो गए। चूँकि इस पारम्परिक ज्ञान की पुष्टि के लिए किसी प्रकार की लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है, इसलिए चीन की सभ्यताओं को आधार प्रदान करने के लिए शांग राजवंश के बारे में किए गए अध्ययन संकल्पना को बल प्रदान करते हैं।

चीन की सभ्यता में कला, संस्कृति और धर्म का मिश्रण देखा गया है। उन पर धर्म और दर्शन के तीन स्तम्भों का बहुत गहरा प्रभाव था : ताओ धर्म, कन्फ्यूशियस धर्म और बौद्ध धर्म। इन्हें "तीन मार्ग" कहा जाता है और इनका लोगों के जीवन जीने के तरीके पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इनका प्रभाव कला, संस्कृति और धर्म को देखने के उनके दृष्टिकोण पर भी पड़ा और इससे चीन की सभ्यता को एक नया रंग मिला।

विशेषज्ञों ने चीन के इतिहास को निम्नलिखित कालखंडों में विभाजित किया है :

1) **प्राचीन काल (8500 ई.पू. - 256 ई.पू.) :** यह हजारों वर्ष पूर्व के बिल्कुल प्रारम्भिक समय से लेकर पुरापाषाण और नवपाषाण काल से होते हुए कांस्य युग तक के अभिलेख आदि का इतिवृत्तात्मक वर्णन करता है। इतिहासकार ज़िया राजवंश से लेकर चाऊ राजवंश तक विभिन्न राजवंशों के इतिहास को चिह्नित करते हैं जैसाकि निम्नलिखित अनुभाग में व्याख्यायित किया गया है।

2) **साम्राज्यवादी काल (221 ई.पू. - 1912 ई.) :** यह कालखंड चीन के इतिहास की सबसे लम्बी अवधि को चिन्हित करता है। यह चिन (221-206 ई.पू.) से शुरू होता है और मध्यकाल की निर्मिति करते हुए चिंग (Qing) (1636-1912 ई.) के शासन पर आकर समाप्त होता है।

3) **आधुनिक काल (1912 - वर्तमान तक) :** यह राजवंशों के शासनकाल के समापन के पश्चात चीनी गणराज्य के अभिलेख की खोजबीन करता है। यह कालखंड उन वर्तमान अभिलक्षणों को प्रस्तुत करता है जो चीन के जनवादी गणराज्य को सन् 1949 से लेकर वर्तमान समय तक शासित करते रहे हैं।

वर्तमान अध्याय के लिए नीचे एक सूची दी गयी है जो संपूर्ण नहीं है। यह सूची केवल प्राचीन काल तक (जिन राजवंश तक) ही सीमित है और यह विद्यार्थियों को उन प्रमुख अभिलक्षणों की परीक्षा करने में सक्षम बनाएगी जिन्होंने चीन के विकास और उसकी संवृद्धि में योगदान दिया है।

7.3.1 ज़िया राजवंश

कृषि करने के लिए छोटे-छोटे आकार के खेत थे, गाँव थे जो समुदायों के रूप में विकसित हो गए थे और ज़िया राजवंश के काल (2070 ई. पू. - 1600 ई. पू.) में इनका कार्य एक केन्द्रीकृत सरकार के माध्यम से चलता था। 1960 और 1970 के दशक में की गई खुदाइयों से प्रगति के स्पष्ट चिन्ह प्राप्त हुए हैं। यह एक ऐसा चिन्ह था कि पाषाण काल से कांस्य युग के दरवाजे तक प्रगति की गयी थी। महान यू ने लगभग तेरह वर्षों तक शासन किया था और अपनी प्रजा को उसने समर्पण और भक्ति के द्वारा प्रेरित किया था। येलो नदी में नियमित रूप से आने वाली बाढ़ों से किसानों की फसलों की रक्षा करने के लिए उसने प्रयास किए थे। जैसाकि पारम्परिक ज्ञान से सुना जाता रहा है, यह महान यू ही था जिसने

आनुवांशिक उत्तराधिकार के आधार पर चलने वाले शासन की स्थापना की और फलस्वरूप राजवंशीय शासन का जन्म हुआ। धीरे-धीरे राजवंश के लोग सभ्रान्त वर्ग के बन गए और किसान कृषि-कार्यों से ही जुड़कर रह गए। ये किसान समुदायों और गाँवों में रहते थे। ज़िया शासकों के पास शक्ति तब तक बनी रही, जब तक तांग द्वारा इस शक्ति का अधिग्रहण नहीं कर लिया गया। तांग ने शांग राजवंश (1600 ई. पू. -1046 ई. पू.) की स्थापना की थी।

7.3.2 शांग राजवंश

तांग ही वह शासक था जिसने शांग राजवंश का प्रतिनिधित्व किया था और 1600 ई.पू. के लगभग मिंगतियाओ की लड़ाई में जी (Jie) को पराजित किया था। यू ने अपनी प्रजा के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन का बलिदान कर दिया था और अपनी शक्तियों व प्रयासों का कभी कोई लाभ नहीं उठाया था। आम जनता यू की प्रशंसा और उसका आदर करती थी। हालाँकि उसके उत्तराधिकारियों में से अन्तिम उत्तराधिकारी जी (Jie) ने, यू के विपरीत, किसानों द्वारा कठोर परिश्रम से अर्जित किए गए धन को व्यर्थ रूप से खर्च किया और किसानों पर भारी-भरकम कर थोप दिए। ज़िया राजदरबार के इस फिजूलखर्च को देखकर तांग ने आगे बढ़कर नेतृत्व करने और करों के भारी बोझ से जनता की रक्षा करने का फैसला किया। एक नेता के रूप में उसने आम जनता पर थोपे गए करों का घटाया जाना सुनिश्चित किया और फिजूलखर्च वाली उन परियोजनाओं को निरस्त कर दिया जो साम्राज्य के संसाधनों को लगातार समाप्त करती जा रही थीं। अपने दृष्टिकोण, बुद्धिमत्ता और दक्षता के साथ उसने लोगों में ऊर्जा का पुनः संचार किया ताकि उन्हें सार्थक कामों में लगाया जा सके। इस प्रकार, उसके साम्राज्य में कला, संस्कृति और धर्म खूब फले-फूले और इस कारण नागरिकों में संतुष्टि, सार्थकता और शान्ति का भाव उत्पन्न हुआ।

शांग राजवंश के पूर्ववर्ती शासक बहुत सारे देवताओं की पूजा करते थे और इनमें एक देवता मुख्य होता था। इसके विपरीत शांग राजवंश के काल में लोगों ने अपने 'महान पूर्वजों' की उपासना की। यह माना जाता था कि युद्ध के दौरान ये पूर्वज कृषि और लोगों की रक्षा करते हैं। लोगों का विश्वास था कि परिवार में जब किसी बड़े सदस्य की मृत्यु होती है तो उन्हें दैवीय शक्तियाँ मिल जाती हैं और आवश्यकता पड़ने पर वे सांत्वना और सहायता प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार पूर्वजों की उपासना करने की प्रथा प्रारम्भ हुई। शीघ्र ही, इस प्रथा ने अलंकृत धार्मिक संस्कारों को जन्म दिया, जिसके अन्तर्गत लोग अपने पूर्वजों को सजी-धजी समाधियों में दफनाते थे और शव के साथ दैनिक और विशिष्ट आवश्यकताओं वाली सभी वस्तुएँ रख दी जाती थीं। सर्वोच्च और राज्य का प्रतिनिधि होने के कारण राजा मुख्य कार्याधिकारी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करता था, जिसके बारे में यह माना जाता था कि वह विशिष्ट शक्तियों का स्वामी है और जीवित तथा मृत व्यक्तियों के बीच वह मध्यस्थ का कार्य करता है।

7.3.3 चाऊ राजवंश (1046–256 ई.पू.)

शांग राजवंश का उत्तराधिकारी चाऊ राजवंश हुआ। 1046 ई. पू. के लगभग हुई मुए की लड़ाई में चाऊ राजवंश के राजा वू ने शांग को पराजित करके चाऊ राजवंश की स्थापना की। स्वर्ग के आदेश (The Mandate of Heaven) का विकास और औचित्य-स्थापन चाऊ राजवंश के समय में हुआ, हालाँकि इसकी जड़ें शांग राजवंश में निहित हैं। स्वर्ग के आदेश की संकल्पना, जैसाकि नाम से ही स्पष्ट है, ने राजा के शासन का औचित्य यह कहकर स्थापित किया कि राजा को शासन करने का अधिकार स्वर्ग के आदेश से प्राप्त है। जिन्होंने शासन किया, उन्हें देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त था और शासकों के आचरण और उनकी

इच्छा के औचित्य की स्थापना की गयी। हालाँकि, शासक जब जनता की इच्छा और ईश्वर के आदेशों का अनुसरण नहीं करते, तो राजा को गद्दी से अवश्य हटा दिया जाना चाहिए। यहाँ तक कि राजा की सन्तान को भी राजा केवल तभी बनाया जाना चाहिए, जब उसके पास लोगों पर शासन करने के सद्‌गुण विद्यमान हों।

इतिहासकारों के अनुसार चूँकि शासन की तिथियों में विशिष्ट विभाजक रेखा नहीं है, आठवीं शताब्दी ई.पू. में शासक के हाथों में जो शक्तियाँ थीं, वे विकेन्द्रीकृत थीं और देश छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था। इन छोटे-छोटे राज्यों में से कुछ राज्य ऐसे थे जिन्होंने स्वयं को सम्प्रभु घोषित करने के प्रयास किए थे। बाहरी और आन्तरिक दबावों के कारण वसन्त ऋतु और शरद ऋतु के काल के साथ-साथ एक और ऋतु हुआ करती थी। यह ऋतु युद्धरत राज्यों की ऋतु होती थी। युद्धरत राज्यों की ऋतु को यह नाम इसलिए दिया गया था क्योंकि इस काल में स्वतन्त्र और छोटे-छोटे राज्य एक-दूसरे से युद्ध किया करते थे। इतने अधिक उथल-पुथल का समय होने के बावजूद चाऊ राजवंश के काल को कला, संस्कृति, धर्म और दर्शन के विकास के मामले में सर्वाधिक आशाजनक कालों में से एक माना जाता है। इस अवधि में अनेक तरीके के चिन्तन और विचार पनपे और सर्वाधिक मेधावी दार्शनिकों और कवियों को उनका उचित स्थान मिला। इनमें से कुछ उल्लेखनीय नाम इस प्रकार हैं - कन्फ्यूशियस, मेन्शियस, मोत्जू, लाओत्जू, ताओ चिएन और सैन्य रणनीतिकार सुनत्जू।

7.3.4 चिन राजवंश

चिन राजवंश का काल चाऊ राजवंश के काल के बाद और हान राजवंश के काल के पहले आता है। चीन का एकीकरण सम्राट चिन शी हुआंग के अधीन 221 ई. पू. में हुआ और यह साम्राज्यवादी चीन का प्रारम्भ था। 214 ई. पू. में चिन शी हुआंग ने उत्तर दिशा में अपनी सीमाओं को सुरक्षित किया तथा दक्षिण-पश्चिम में सिचुआन के अधिकांश भाग को अपने अधिकार में ले लिया। चिन सैनिकों ने गुआंगझोऊ के तटीय इलाकों पर विजय प्राप्त की तथा फुझोऊ और गुइलिन पर अधिकार कर लिया। वे दक्षिण में हनोई तक पहुँच गए और यह पहला राजवंश था जो दक्षिण में अपना साम्राज्य-विस्तार करने में सफल रहा। 210 ई. पू. में इस राजवंश के प्रथम सम्राट की मृत्यु के पश्चात साम्राज्य लेफ्टिनेण्ट चू के हाथों में चला गया जिसने बाद में हान राजवंश की स्थापना की। चिन राजवंश ने दूरगामी प्रभावों वाले सुधार किए और चीन का नाम भी इसी राजवंश के नाम से व्युत्पन्न हुआ है।

7.3.5 हान राजवंश

हान राजवंश का शासन 206 ई. पू. से लेकर 220 ई. तक कायम रहा। लगभग चार सौ वर्षों तक शासन करने वाले इस राजवंश के काल को चीन के इतिहास के महानतम कालों में से एक माना जाता है। इस अवधि के दौरान चीन का रूपान्तरण सैन्य, आर्थिक और सांस्कृतिक शक्ति के रूप में हुआ। इस साम्राज्य ने अपने सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभावों का विस्तार कोरिया, जापान, मंगोलिया, वियतनाम और मध्य एशिया के अन्य देशों तक भी किया। हान साम्राज्य का नियन्त्रण केन्द्रीय सत्ताओं द्वारा किया जाता था। इन केन्द्रीय सत्ताओं को कमाण्डरी कहा जाता था। हान राजवंश को अनेक विद्रोहों की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। हान की सम्प्रभुता मध्य एशिया तक स्थापित की गयी थी और उन्होंने रेशम मार्ग की स्थापना करने में भी अपना योगदान दिया था। हान शासकों ने झियोंग्नू (घुमन्तू या यायावर लोगों का एक महासंघ) को दो राष्ट्रों में विभाजित किया – दक्षिणी और उत्तरी झियोंग्नू। हान साम्राज्य के उत्तरी भूभागों पर घुमन्तू महासंघ का अधिकार और शासन था।

7.3.6 जिन राजवंश

हान राजवंश के बाद, 220 ई. से 589 ई. तक छह राजवंशों का शासन रहा। जिन राजवंश इन्हीं में से एक था। जिन राजवंश के शासन की अवधि 265 ई. से 420 ई. तक की है। यह राजवंश दो भागों में विभाजित था। पहला भाग पश्चिमी जिन का था, जिसकी स्थापना सिमा यन ने की थी। इसकी राजधानी लुयोयांग थी। दूसरा भाग पूर्वी जिन का था, जिसकी स्थापना सिमा रुई ने की थी। इसकी राजधानी जियानकांग थी।

सुई राजवंश और तांग राजवंश के बाद छह राजवंशों का शासनकाल आया, और 907 ई. से 960 ई. तक चीन पर पाँच अलग-अलग राजवंशों ने शासन किया। इसके पश्चात सोंग, युआन और मिंग राजवंशों ने चीन के विभिन्न हिस्सों पर शासन किया।

7.3.7 व्यापार और वाणिज्य

चीन की प्राचीन सभ्यता में व्यापार और वाणिज्य की दशा का संक्षिप्त वर्णन यहाँ प्रासंगिक है। चीन शेष विश्व के साथ रेशम मार्ग के माध्यम से जुड़ा हुआ था। रेशम मार्ग चार हजार मील लम्बा था। इसका नाम रेशम मार्ग इसलिए पड़ा क्योंकि इस मार्ग के माध्यम से मुख्यतः रेशमी वस्त्रों का व्यापार किया जाता था। यह व्यापार मार्ग चीन से लेकर पूर्वी यूरोप तक फैला हुआ था और इसका विस्तार व प्रोत्साहन हान राजवंश के शासनकाल (206 ई.पू. से 220 ई. तक) के दौरान किया गया। चीन की उत्तरी सीमाओं से लेकर भारत और ईरान होते हुए यह मार्ग पूर्वी यूरोप में वर्तमान तुर्की और भूमध्यसागर तक पहुँचता था। इस व्यापार मार्ग ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभायी क्योंकि यह विभिन्न राज्यों और साम्राज्यों को आपस में जोड़ने के लिए सेतु का कार्य करता था। व्यापार और वाणिज्य की सफलता के लिए इस सेतु ने एक प्रमुख माध्यम उपलब्ध कराया। इतिहास में, चीन को शेष विश्व में 'रेशम की भूमि' के नाम से जाना जाता था। रोमन लोगों ने चीन को उचित ही 'रेशम की भूमि' कहा था। चीन के लोगों ने शेष विश्व को हजारों वर्षों तक रेशम बेचा और वैश्विक बाजार में अपनी एक लोकप्रिय पहचान स्थापित की। इस मार्ग ने और रेशम ने मिलकर सरकार को वाणिज्य के क्षेत्र में जबरदस्त मजबूती प्रदान की। इस मार्ग से होकर व्यापारी यात्रा करते थे और रेशम के अलावा चाय, चीनी, नमक, मसालों और चीनी मिट्टी के बर्तनों का निर्यात किया करते थे। इस मार्ग ने वाणिज्य के अतिरिक्त सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भी काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी और चीन की सभ्यता के सम्पर्कों में बढ़ोत्तरी की। बाहरी आक्रमण से अपने व्यापार और मार्ग की रक्षा के लिए, चीन के राजवंशों ने चीन की महान दीवार का दोनों दृष्टियों से विस्तार किया : सैन्यरक्षा की दृष्टि से और सुरक्षा की भी दृष्टि से।

7.3.8 चीन की महान दीवार

चीन की महान दीवार 5,500 मील लम्बी है और यह दीवार चीन के इतिहास में एक मिथकीय दीवार का स्थान रखती है। यह चीन की उत्तरी सीमा को आच्छादित करती है और निर्माण व सुरक्षा के अपने इतिहास की कथा बहुत गर्व से कहती है। सुरक्षा की दृष्टि से, मंगोलों जैसे बार-बार हमला करने वाले शक्तिशाली आक्रमणकारियों को दूर रखने के लिए छोटी-छोटी दीवारें बनायी गयी थीं। चीन की महान दीवार चीन के प्रथम सम्राट चिन शी हुआंग जैसे स्वप्नद्रष्टा व्यक्ति की कृति थी और इसका निर्माण सुरक्षा के लिए किया गया था। इसमें हजारों ऊँचे-ऊँचे किले हैं जहाँ पर बैठकर सैनिक बाहरी आक्रमणकारियों से अपने साम्राज्य की रक्षा कर सकते थे। इस दीवार की यात्रा मिंग राजवंश द्वारा किए गए योगदान तक जारी रही। वर्तमान में यह चीन के सर्वाधिक आश्चर्यजनक पर्यटन-आकर्षणों में से एक है। इसका आकर्षण ऐसा है कि यहाँ प्रति वर्ष एक करोड़ पर्यटक आते हैं। इसका

इतिहास, आक्रमणकारियों से सुरक्षा के लिए की जाने वाली किलेबन्दी के सन्दर्भ में, इतिहासकारों की पुस्तकों में इसके जन्म की घोषणा करता है।

बोध प्रश्न 2

1) उन विभिन्न राजवंशों की व्याख्या कीजिए, जिन्होंने चीन में शासन किया।

.....

.....

.....

.....

.....

2) रेशम मार्ग से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) चीन की महान दीवार के महत्व को विस्तार से बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

7.4 सारांश

इस इकाई में हमने यह चर्चा की है कि सभ्यता वहाँ अस्तित्व में आयी, जहाँ की भौगोलिक स्थिति कृषिगत व्यवस्था के अनुकूल थी। जब कृषि-उत्पादन का अधिशेष होने लगा तो लोगों को गैर-कृषि कार्यों में संलग्न होने का और विशेषज्ञता हासिल करने का अवसर मिला। इससे राज्य और सरकारों के उभार को बल मिला। कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए राज्य और सरकारों ने नियमों की स्थापना की और नीतियाँ बनायीं ताकि सामाजिक श्रेणीतन्त्रों को सँभाला जा सके और वृहत्तर समुदायों पर शक्ति का विनियमन किया जा सके। पर्यटन का विकास सत्ता द्वारा आम जनता के लिए किए जाने वाले आधारभूत संरचना के विकास और संचार के लिए किए जाने वाले प्रावधानों से सम्बन्धित है। सारी प्राचीन सभ्यताओं में यात्रा और पर्यटन के विकास में कृषि क्षेत्रक, समाज और धर्म ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इस इकाई में हमने प्राचीन काल में यात्रा और पर्यटन की संवृद्धि के कारणों पर चर्चा करने की कोशिश की है तथा प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक यानी चीन की सभ्यता पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में चर्चा भी की है। शेष प्राचीन सभ्यताओं पर अन्य इकाई में चर्चा की जाएगी।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि व्यापार और वाणिज्य के जरिये अर्थव्यवस्था को संवृद्धि प्रदान करने से सम्बन्धित अलग-अलग सामाजिक दशाओं ने; सामाजिक पहचान की स्थापना और उनके प्रबलन ने; पुरातात्विक और सामाजिक विरासत के साथ अपनी संस्कृति के संरक्षण ने; लोगों के बीच समझ और सद्भाव विकसित करने और समाजों को सहयोग प्रदान करने के लिए समाजों के आरपार किए जाने वाले संचार के तीव्रीकरण ने प्राचीन सभ्यताओं में नए पर्यटन को परिभाषित करने में सहायता की है और पर्यटन का प्रसार किया है।

7.5 शब्दावली

सभ्यता : सभ्यता का तात्पर्य भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और बहुत सारे अन्य घटकों के अंतर्संबंधित और अंतर्निर्भर संजाल पर आधारित जटिल समाजों से है, जिनके कुछ सामान्य (Common) अभिलक्षण होते हैं।

रेशम मार्ग : रेशम मार्ग चार हजार मील लम्बा था। चीन शेष विश्व के साथ रेशम मार्ग के माध्यम से जुड़ा हुआ था। इसका नाम रेशम मार्ग इसलिए पड़ा क्योंकि इस मार्ग के माध्यम से मुख्यतः रेशमी वस्त्रों का व्यापार किया जाता था। यह व्यापार मार्ग चीन से लेकर पूर्वी यूरोप तक फैला हुआ था।

चीन की महान दीवार : यह चीन की उत्तरी सीमा को आच्छादित करती है और निर्माण व सुरक्षा के अपने इतिहास की कथा बहुत गर्व से कहती है।

7.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 7.1 देखिए।

2) भाग 7.2 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) उप-भाग 7.3.1 से 7.3.6 तक देखिए।

2) उप-भाग 7.3.7 देखिए।

3) उप-भाग 7.3.8 देखिए।

इकाई 8 प्रारम्भिक साम्राज्यों का उत्थान और पतन

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 प्राचीन साम्राज्य (निकट पूर्व)

- 8.2.1 मिस्र
- 8.2.2 सुमेर और अक्कद (Akkadian)
- 8.2.3 मितन्नी (Mitanni)
- 8.2.4 बेबीलोनिया
- 8.2.5 असीरिया
- 8.2.6 हिटाइट (Hittite)
- 8.2.7 फिनिशिया (Phoenicia)
- 8.2.8 फारस

8.3 प्राचीन उप-सहारा अफ्रीका

8.4 प्राचीन भारत

8.5 प्राचीन यूरोप

- 8.5.1 एथेंस
- 8.5.2 स्पार्टा
- 8.5.3 मकदूनिया
- 8.5.4 यूनानी (Hellenistic) राज्य
- 8.5.5 सेल्यूसिड
- 8.5.6 टॉलेमियाई
- 8.5.7 रोमन

8.6 प्राचीन यूरेशियाई स्टेपीज़

- 8.6.1 सीथियन
- 8.6.2 सरमातियन
- 8.6.3 झियोंग्नू (Xiongnu)
- 8.6.4 हूण (Hunnic)

8.7 सारांश

8.8 शब्दावली

8.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप इस योग्य हो जाएँगे कि आप :

- साम्राज्य शब्द का अर्थ समझ सकें;
- विश्व के अलग-अलग भागों में स्थापित विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं के बारे में चर्चा कर सकें;

- विभिन्न प्रारम्भिक साम्राज्यों के उत्थान और पतन को समझ सकें।

8.1 प्रस्तावना

साम्राज्य शब्द का प्रयोग एक अकेली सर्वोच्च सत्ता यानी एक सम्राट या राजा द्वारा नियन्त्रित किए जाने वाले राज्यों या देशों के समूह को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है। साम्राज्य (एम्पायर) का विस्तार-क्षेत्र राज्य (किंगडम) से अधिक होता है। साम्राज्यों का गठन इसके विविधतापूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और नृजातीय घटकों के कारण घटित होता है। साम्राज्य शब्द के स्थान पर उपनिवेशवाद शब्द का प्रयोग भी कर दिया जाता है लेकिन दोनों के अर्थों में बहुत अन्तर है। साम्राज्य शब्द का प्रयोग एक शक्तिशाली राज्य या समाज को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है जबकि उपनिवेशवाद शब्द का प्रयोग अपेक्षाकृत कम शक्तिशाली राज्य या समाज के लिए किया जाता है। यदि हम इतिहास में पीछे जाएँ तो पाते हैं कि प्राचीन काल में बिल्कुल पहली सभ्यता के समय से ही अनेक साम्राज्यों का अस्तित्व था। इनका वर्णन नीचे दिया गया है। अध्ययन के उद्देश्य के लिए प्रारम्भिक साम्राज्यों को प्राचीन निकट पूर्व, प्राचीन उप-सहारा अफ्रीका, प्राचीन भारत, प्राचीन चीन, प्राचीन यूरोप और प्राचीन यूरेशियाई स्टेपीज में विभाजित किया गया है।

8.2 प्राचीन साम्राज्य (निकट पूर्व)

इस श्रेणी के अन्तर्गत शामिल प्रारम्भिक साम्राज्यों का वर्णन इस प्रकार है :

8.2.1 मिस्र

मिस्र की सभ्यता को विश्व की प्रथम सभ्यता माना जाता है। इसका अस्तित्व 3000 ई. पू. के लगभग नील नदी की घाटी के आसपास था। मिस्रवासियों ने अपनी शक्ति का चरमोत्कर्ष नवीन राज्य (न्यू किंगडम) के दौरान फैरो शासकों के काल में हासिल किया। प्राचीन मिस्र का क्षेत्रफल निकट पूर्व, भूमध्यसागर और उप-सहारा अफ्रीका तथा दक्षिण में न्यूबिया तक विस्तृत था। यह सभ्यता अपनी निर्माण परियोजनाओं के साथ-साथ लेखन के अपने नवाचार के लिए भी उल्लेखनीय थी। ऐसे बहुत सारे कारक थे, जिन्होंने एक सभ्यता के रूप में मिस्र के उभरने में अपना योगदान दिया। नील नदी की उपजाऊ घाटी और मिस्र की प्राकृतिक सीमाओं जैसे कारकों के चलते ही मिस्र पर कभी कोई बाहरी आक्रमण नहीं हुआ और मिस्र की शक्तिशाली सेना किसी भी तरीके के बाह्य आक्रमण की चुनौतियों के लिए सदैव तैयार रहती थी। लेकिन ऐसा लम्बे समय तक नहीं चला और 1000 ई. पू. तक, फैरो शासकों ने अपनी सीमा को सुरक्षित रखते हुए और अपने पड़ोसियों के साथ राजनयिक सम्बन्धों को कायम रखते हुए नवीन राज्य (न्यू किंगडम) के रूप में एक नयी व्यवस्था को स्थापित किया। टुथमोसिस प्रथम और टुथमोसिस तृतीय शक्तिशाली फैरो थे जिन्होंने मिस्र के क्षेत्रफल का विस्तार एक साम्राज्य की तरह किया। अमेनहोतेप चतुर्थ जब गद्दी पर बैठा तो उसने अपना नाम परिवर्तित करके अखेनातेन कर लिया। उसने 'आतेन' नामक देवता को सर्वोच्च देवता के रूप में बहुत ऊँचा स्थान दिया और अन्य देवताओं की उपासना का दमन किया। उसने पुरोहित व्यवस्था पर भी प्रहार किया। अपनी राजधानी को परिवर्तित करके उसे नए नगर अखेतातेन ले जाने का श्रेय भी अखेनातेन को जाता है। इसकी मृत्यु के बाद इसका धर्म अपने अस्तित्व को बचा नहीं सका और इसका अधिग्रहण अमर्ना काल ने कर लिया। रैमेसेज ने गद्दी सँभाली और अनेक मन्दिरों, मूर्तियों और चौकोर नुकीले स्तम्भों का निर्माण कराया। कादेश की लड़ाई में उसकी सेना हिटाइट्स लोगों (Hittites) के विरुद्ध लड़ी और इतिहास की प्रथम अभिलिखित शान्ति सन्धि पर सहमत हुई। मिस्र की

सम्पदा आक्रमणकारियों के प्रलोभन का लक्ष्य बनी, विशेषतौर पर लीबिया और समुद्री लोगों के आक्रमण के लिए। इसके परिणास्वरूप मिस्र ने सीरिया और फिलिस्तीन पर से अपना नियन्त्रण खो दिया। भ्रष्टाचार, मकबरों की लूट और नागरिक अशान्ति जैसी आन्तरिक समस्याओं ने बाह्य आक्रमण को बल प्रदान किया। सभ्यता के इतिहास में मिस्र का साम्राज्य अनेक चीज़ों के लिए उल्लेखनीय है; जैसे – निर्माण की तकनीकों के लिए, जो पिरामिडों, मन्दिरों और चौकोर नुकीले स्तम्भों के निर्माण के रूप में विकसित हुई; खान से पत्थर निकालने के लिए; सर्वेक्षण-विधियों के लिए; गणित, चिकित्सा, सिंचाई-व्यवस्था, कृषि सम्बन्धी प्रथाओं और पानी के जहाजों के निर्माण के लिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने काँच से जुड़ी तकनीकों, स्फिंक्स, लेखन कला और साहित्य सृजन में भी अपना योगदान दिया। उन्होंने इस विश्व के साथ अपनी कला के साथ संचार किया और उनके द्वारा बनाए गए स्मारकों के खण्डहर यात्रियों के लिए आकर्षण के केन्द्र बन गए हैं।

8.2.2 सुमेर और अक्कद (Akkadian)

दजला और फरात नदियों के मध्य स्थित क्षेत्र से इतिहासकार भलीभाँति परिचित हैं। यह क्षेत्र प्राचीन सभ्यता का एक महत्वपूर्ण स्थल था। इतिहासकार इस क्षेत्र को सुमेर कहते हैं, जो मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक) के दक्षिणी भाग में अवस्थित था। सुमेर वाले भाषा, स्थापत्य, शासन और अन्य विषयों में अपने नवाचारों के लिए विख्यात हैं। एक प्राचीन स्थल के रूप में सुमेर का इतिहास अतीत में 4500 ई. पू. से 4000 ई. पू. तक जाता है। इस काल में सर्वप्रथम इसकी स्थापना उबैद लोगों द्वारा की गयी थी। वे पशुपालन और कृषि के अपने कौशल तथा वस्त्रों की बुनाई, बर्तनों के निर्माण और बढ़ईगीरी की अपनी कला के लिए जाने जाते थे। सुमेरियाई गाँवों और कस्बों की स्थापना उबैद लोगों के कृषि समुदायों के आसपास की गयी थी। एरिडु, निप्पुर, लगाश, किश, उर और उरुक जैसे नगर-राज्यों से भी सुमेरियाई संस्कृति के अस्तित्व के संकेत मिले हैं। प्रत्येक नगर चारों ओर से दीवार से घिरा होता था और किसी भी नगर के अपने विशिष्ट स्थानीय देवी-देवता होते थे, जिनकी वहाँ के लोग उपासना किया करते थे। 2000 ई. पू. तक इस क्षेत्र में इनके स्थान पर अक्कद लोग आ गए किन्तु कीलाकार लिपि (चित्र-लेख की पट्टिका) के रूप में लेखन कला अगले 2000 वर्षों तक जारी रही।

8.2.3 मितन्नी (Mitanni)

मितन्नी राजवंश को असीरियाई लोग हैनिगलबात के रूप में जानते थे, जबकि मिस्रवासी इसे नहारिन के रूप में जानते थे। मितन्नी का काल 1500 ई. पू. से 1240 ई. पू. के बीच था और इसका विस्तार इराक, सीरिया और तुर्की तक था। इस पूरे क्षेत्र में कृषि ही होती थी और सिंचाई के कृत्रिम साधनों का प्रयोग नहीं किया जाता था। मितन्नी लोगों को रथ हाँकने में और घुड़सवारी में प्रसिद्ध माना जाता था। उन्हें युद्ध के दौरान प्रयोग किए जाने वाले हल्के रथों के नए प्रयोग करने का श्रेय भी जाता है। इन रथों के पहियों में तीलियाँ होती थीं। घोड़ों को प्रशिक्षित करने वाली प्राचीनतम पुस्तक का अस्तित्व यह सिद्ध करता है कि राष्ट्र में समृद्धि थी। मिस्र, हिटाइट, बेबीलोनिया और असीरिया के साथ-साथ यह भी 'महान शक्तियों के समूह' का हिस्सा था।

8.2.4 बेबीलोनिया

बेबीलोन नाम की उत्पत्ति अक्कदियों के शब्द 'बाव-इल' अथवा 'बाविलिम' से हुई है जिसका अर्थ है "ईश्वर का द्वार" या "देवताओं का द्वार"। बेबीलोन शब्द को यूनानी भाषा में भी प्रवेश मिला हुआ है। इतिहासकारों के लिए बेबीलोनिया नगर का महत्व अनेक कारणों से है; जैसे - इसकी दीवारें और भवन, सीखने के और संस्कृति के केन्द्र, विधि संहिता और इन सबसे

बढ़कर लटकते हुए बगीचे (हैंगिंग गार्डेन्स)। ये बगीचे मनुष्यों द्वारा बनायी गयी ड्योढ़ी पर लगाए गए पेड़-पौधों और वनस्पतियों के समूह की तरह थे, जिनकी सिंचाई यन्त्रों से की जाती थी। लटकते हुए इस बगीचे को विश्व के सात आश्चर्यों की सूची में स्थान प्रदान किया गया है। बेबीलोन, अठारहवीं शताब्दी ई. पू. से छठवीं शताब्दी ई. पू. के बीच अस्तित्वमान प्राचीन मेसोपोटामिया में स्थित एक राज्य (किंगडम) था। बेबीलोन नगर मूल रूप से फरात नदी के तट पर बसा हुआ अक्कदियों का एक कस्बा था। यह बराबर-बराबर भागों में विभाजित था और प्रत्येक भाग में तीक्ष्ण ढाल वाले तटबन्ध थे ताकि बाढ़ के मौसम में नदियों के पानी को रोका जा सके। उन्नीसवीं शताब्दी ई. पू. के दौरान इस स्वतन्त्र नगर-राज्य में प्रथम बेबीलोनियाई राजवंश का उत्थान हुआ। अठारहवीं शताब्दी ई. पू. में हम्मूराबी ने एक प्रमुख नगर के रूप में बेबीलोन का रूपान्तरण किया और स्वयं को इसका राजा घोषित किया। दक्षिणी मेसोपोटामिया अब बेबीलोन हो गया और निप्पुर इसका पवित्र शहर। असीरियाई, केसाइट और एलामाइट लोगों के अन्तर्गत किए जाने वाले सैन्य अभ्यासों और नवाचारों ने निप्पुर को अत्यधिक क्षति पहुँचाई लेकिन इसके बाद 609 ई. पू. से 539 ई. पू. तक निप्पुर नवीन बेबीलोनियाई साम्राज्य की राजधानी रहा। नवीन बेबीलोनियाई साम्राज्य के पतन के बाद निप्पुर नगर पर क्रमशः ऐकेमनी, सेल्यूसिड, पार्थियन, रोमन और ससानी शासकों का शासन रहा। अपने शासनकाल में फारसी शासकों ने बेबीलोन को कला और शिक्षा के एक केन्द्र के रूप में विकसित किया। बेबीलोनियाई गणित, ब्रह्माण्ड-विद्या और खगोलिकी की बहुत प्रशंसा की गयी है और यह कहा जाता है कि पाइथागोरस अपना प्रसिद्ध प्रमेय बेबीलोनियाई प्रारूप के अध्ययन के बाद ही दे सका था। पार्थियन साम्राज्य के दौरान 141 ई. पू. तक आते-आते बेबीलोन का अन्त हो गया और इसे इसका पहले जैसा वैभव और महानता दुबारा कभी नहीं मिली।

8.2.5 असीरिया

असीरिया शब्द का प्रयोग ऊपरी दजला नदी के क्षेत्र को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है। प्रारम्भ में असीरिया के निवासी अक्कद लोगों की भाषा बोलते और लिखते थे लेकिन बाद में आकर उन्होंने आरमेइक भाषा, जिसे समय के साथ लोकप्रियता मिलती चली गयी थी, का प्रयोग करना शुरू कर दिया। इतिहासकारों ने असीरिया के उत्थान और पतन को तीन महत्वपूर्ण कालखण्डों में विभाजित किया है – पुराना राज्य, मध्यकालीन साम्राज्य और नवीन असीरियाई साम्राज्य। इन तीनों में, नवीन असीरियाई साम्राज्य को सर्वाधिक शक्तिशाली और विख्यात माना जाता है, जिसका शासनकाल 934 से 609 ई. पू. तक था। असीरियाई साम्राज्य का महत्व इस तथ्य में है कि यह साम्राज्य सभी मेसोपोटामियाई साम्राज्यों में सबसे अधिक महान था तथा इसने नौकरशाही और सैन्य रणनीतियों का विस्तार और विकास किया था। नौकरशाही और सैन्य रणनीतियों ने आगे चलकर इस साम्राज्य के और अधिक फलने-फूलने में और इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

8.2.6 हिटाइट

यह साम्राज्य अठारहवीं शताब्दी ई. पू. में हत्तुसा, अनातोलिया में विकसित हुआ था। हिटाइट्स लोग भारोपीय (हिन्द-यूरोपीय) भाषा बोलते थे। चौदहवीं शताब्दी ई. पू. के काल को हिटाइट का स्वर्णिम काल कहा जाता है क्योंकि इसी समय अपना विस्तार करते हुए यह साम्राज्य अपने चरम पर पहुँचा था। इस दौरान इसके क्षेत्रफल का विस्तार इतना अधिक हो गया था कि इसमें अनातोलिया का केन्द्रीय भाग, सीरिया का उत्तर-पश्चिमी हिस्सा, उगरित और उत्तरी मेसोपोटामिया तक सम्मिलित थे। 1180 ई. पू. तक हिटाइट साम्राज्य अनेक स्वतन्त्र नवीन हिटाइट नगर-राज्यों में विभाजित हो चुका था। इतिहास में हिटाइट्स का स्थान उल्लेखनीय इसलिए है क्योंकि इन्होंने रथ-निर्माण के साथ-साथ

लौह-कलाकृतियों के विनिर्माण के क्षेत्र में भी अपना कौशल विकसित किया था। हिटाइट लोगों की समृद्धि व्यापार मार्गों और धातुओं के स्रोतों पर उनके नियन्त्रण के कारण भी थी।

8.2.7 फिनिशिया (Phoenicia)

फिनिशिया की इस प्राचीन सभ्यता का प्रादुर्भाव 1500 ई. पू. से 322 ई. पू. के दौरान भूमध्य सागर के माध्यम से होने वाले समुद्री व्यापार के कारण हुआ। यह सभ्यता वर्तमान समय के सीरिया, लेबनान और उत्तरी इजरायल वाले क्षेत्रों तक फैली। सभी महत्वपूर्ण नगर भूमध्य सागर की तटरेखा पर स्थित थे। 1550 ई. पू. से 300 ई. पू. के बीच इसका विकास समुद्री व्यापार संस्कृति के एक केन्द्र के रूप में हुआ था। फिनिशियाई लोग समुद्री परिवहन में श्रेष्ठ थे और उन्होंने विशेष तरह के पानी के जहाज बनाए थे, जिन्हें गैली कहा जाता था। यह एक लम्बा और सपाट जहाज होता था, जिसका युद्ध में भी प्रयोग किया जा सकता था। इस गैली को वे घोड़े के सिर से सजाते थे जो समुद्र के देवता यम की एक प्रतिकृति होता था। फिनिशिया के सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य टायर और सिडोन थे जबकि बायब्लोस और बालबेक जैसे नगरों का विकास महत्वपूर्ण आध्यात्मिक और धार्मिक केन्द्रों के रूप में किया गया था। ये काँच के निर्माण, रंगों के उत्पादन में एकाधिकार, सामुद्रिक विनिर्माण के साथ-साथ विलासिता के सामान और सामान्य वस्तुओं के विनिर्माण के लिए भी जाने जाते थे। यूनानी लोग फिनिशियाई लोगों को 'बैगनी लोग' कहकर सम्बोधित करते थे क्योंकि फिनिशियाई लोग बैगनी रंग का विनिर्माण करते थे और श्रमिकों की पूरी त्वचा पर नीले रंग के ढेर सारे दाग-धब्बे लगे रहते थे। हेरोडोटस के अनुसार, वर्णमाला का उद्‌भव फिनिशिया में हुआ था जिसे फिनिशियाई शासक कादमुस द्वारा यूनान ले जाया गया था। यही फिनिशियाई वर्णमाला अधिकतर समकालीन पश्चिमी भाषाओं का आधार है। पवित्र पुस्तक बाइबिल का नामकरण भी फिनिशियाई नगर गेबल के नाम के आधार पर हुआ है। गेबल शहर लिखने के काम में उपयोग किए जाने वाले कागजों के लिए जाना जाता था। यहाँ से प्राचीन मिस्र और यूनान को इन कागजों का निर्यात किया जाता था।

8.2.8 फारस

फारसी सभ्यता पदबन्ध का प्रयोग दो अलग-अलग किन्तु अंतर्संबन्धित सांस्कृतिक इकाइयों को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है : पूर्व-इस्लामी फारसी सभ्यता और इस्लामी फारसी सभ्यता। पूर्व-इस्लामी फारसी सभ्यता में ऐकेमनी शासकों के फारसी साम्राज्यों का काल सम्मिलित है जिन्होंने 550 ई. पू. से 330 ई. पू. के बीच शासन किया जबकि पार्थियन और ससानी साम्राज्यों ने 140 ई.पू. से 640 ई. तक शासन किया। ऐकेमनी साम्राज्य फारस का प्रथम साम्राज्य था जिसका विस्तार विश्व में तीन महाद्वीपों तक था : यूरोप, एशिया और अफ्रीका तक। किन्तु इसमें अफगानिस्तान, पाकिस्तान, तुर्की, बाल्कन प्रायद्वीप, काला सागर, आधुनिक इराक, सऊदी अरब, जॉर्डन, इजरायल, लेबनान, सीरिया, मिस्र और लीबिया के बड़े और छोटे भाग भी शामिल थे। इस प्रकार, ऐकेमनी साम्राज्य लगभग 85 लाख वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ था। इसकी सांस्कृतिक और आर्थिक उपलब्धियाँ उच्च स्तर की थीं। प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल पर्सीपोलिस ऐकेमनी साम्राज्य से ही सम्बन्धित है और इसे यूनेस्को द्वारा सन् 1979 में विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया है। सिकन्दर महान ने युद्ध में फारसी सेना को 334 ई. पू. में ग्रैनिकस में, 333 ई. पू. में आइसस में और अन्त में 331 ई. पू. में ग्वाटेमाला में पराजित किया था। पार्थियन साम्राज्य ईरान में एक अन्य साम्राज्य था जिसने वृहत्तर ईरान, मेसोपोटामिया और आर्मेनिया के अधिकांश हिस्से पर शासन किया था। पार्थियनों ने कला और स्थापत्य, धार्मिक आस्थाएँ और विश्वास, शाही प्रतीक चिन्ह विभिन्न समकालीन साम्राज्यों से उत्तराधिकार में प्राप्त किए थे। आर्सेसिड राजदरबार ने प्राचीन यूनानियों की अनेक चीज़ों की नकल की थी और इसे ईरानी

परम्पराओं के पुनरुत्थान के रूप में देखा गया। आर्सेसिड शासकों ने, यह दर्शाने के लिए कि वे ऐकेमनी साम्राज्यों के उत्तराधिकारी हैं, राजाओं के राजा की उपाधि धारण की किन्तु वास्तविक तथ्य यह है कि वे स्थानीय राजाओं की हैसियत वाले अनुचर मात्र थे जबकि ऐकेमनी साम्राज्य में केन्द्रीय स्तर पर "क्षत्रपों" की नियुक्ति स्वायत्तशासी निकाय के रूप में की जाती थी। आर्सेसिड शक्ति के विस्तार के कारण केन्द्रीय सरकार के कार्यालय को तुर्कमेनिस्तान के निसा से हटाकर दजला के टेसीफोन ले जाया गया। ससानी (Sassanid) साम्राज्य ईरान का चौथा राजवंश था जो पार्थियनों के पश्चात आए थे। ससानी लोगों ने 226 ई. से 651 ई. तक शासन किया था। जिन भौगोलिक क्षेत्रों पर ससानी लोगों ने शासन किया, उनमें आधुनिक ईरान, इराक, आर्मेनिया, अफगानिस्तान, पूर्वी तुर्की, सीरिया, पाकिस्तान, काकेशिया, मध्य एशिया और अरब सम्मिलित थे। खुसरो द्वितीय ने 590 ई. से 628 ई. तक शासन किया और इसके शासनकाल में मिस्र, जॉर्डन, फिलिस्तीन और लेबनान भी ससानी साम्राज्य का अंग बन गए थे। ससानी साम्राज्य का काल फारसी सभ्यताओं का स्वर्णिम काल सिद्ध हुआ। ससानी साम्राज्य का काल रोमनों और फारसियों के बीच होने वाले युद्धों के लिए भी उल्लेखनीय है। इन युद्धों को मानवीय इतिहास में सबसे लम्बे समय तक चलने वाले संघर्षों में गिना जाता है। बिजेण्टाइन और ससानी लोगों के बीच निरन्तर चलने वाले युद्धों के कारण ससानी साम्राज्य दुर्बल से दुर्बलतर होता चला गया। अरब की सेनाओं ने टेसीफोन पर अधिकार कर लिया। निखावाँद की लड़ाई के दौरान फारसी कुलीन वर्ग को पलायन करके खुरासान के पूर्वी प्रान्त में जाने को बाध्य होना पड़ा।

8.3 प्राचीन उप-सहारा अफ्रीका

केरमा संस्कृति प्रारम्भिक सभ्यता थी जो आधुनिक सूडान के न्यूबिया में लगभग 2500 ई. पू. से 1600 ई. पू. के मध्य अस्तित्वमान थी। प्राचीन मिस्र के युग में यह एक सूडानी राज्य था जिसका विस्तार केन्द्रीय सूडान से लेकर आधुनिक समय के इजरायल तक था। 1500 ई. पू. तक यह मिस्र के साम्राज्य में पूरी तरह से समाहित हो गया था किन्तु ग्यारहवीं शताब्दी ई. पू. में जब कुश राज्य का उद्‌भव हुआ तो कुश राज्य ने मिस्र से यह क्षेत्र फिर से वापस ले लिया। कुश लोग उप-सहारा अफ्रीका के राज्यों में से सर्वप्रथम लोग थे जिन्होंने लोहे के हथियारों का प्रयोग किया। 752 ई. पू. समाप्त होते-होते थीबेज (Thebes) लोग भी कुश राज्य के अंग बन चुके थे। 653 ई.पू. तक कुश लोग असीरियाई लोगों से पराजित हो चुके थे किन्तु वे क्षेत्र में शक्तिशाली बने रहे और उप-सहारा अफ्रीका के व्यापार संसाधनों पर उनका नियन्त्रण बना रहा। रानी अमानीरेनस के नेतृत्व में कुश लोगों ने रोमन साम्राज्य के विरुद्ध एक युद्ध लड़ा और आगस्टस सीजर के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किया। यरुशलम को पराजित करने के लिए इन्होंने 70 ई. में रोम का भी साथ दिया। 350 ई. में जब अक्सुम साम्राज्य ने कुश राज्य को हरा दिया तो कुश राज्य के युग का समापन हो गया।

मैक्रोबियाई प्राचीन लोग थे जो पहली सहस्राब्दी ई.पू. के दौरान सोमालिया में निवास करते थे। वे शवों का लेपन किया करते थे और उन्हें शरीर क्रिया विज्ञान व रसायन विज्ञान का ज्ञान था। अपने परिजनों और सम्बन्धियों के मृत शरीरों को सुरक्षित रखने में वे कुशल थे। मैक्रोबिया अपने स्वर्ण के लिए भी विख्यात था। सोमालिया का व्यापारिक सम्पर्क प्राचीन मिस्रवासियों के साथ स्थापित था और वे मिस्र को हर्र-बहेड़, लोहबान और गोंद जैसे संसाधनों का निर्यात किया करते थे। सोमालिया के अनेक स्थल प्रसिद्ध व्यापार केन्द्रों के रूप में विकसित हुए; जैसे – मोसिलोन, मलाओ, मुण्डुस, तबाए आदि। ये केन्द्र सोमालियाई व्यापारियों को फिनिशिया, टॉलेमीकालीन मिस्र, यूनान, पार्थियन फारस, सबा, नाबाटिया और रोमन साम्राज्य जैसे स्थलों से जोड़ते थे। प्राचीन सोमालियाई नाविकों ने माल-परिवहन के

लिए "बेडेन" नामक एक समुद्री पोत का विकास किया था। अक्सुम साम्राज्य मुख्य रूप से व्यापार करने वाला एक देश था जिसका उद्‌भव उत्तरी इथियोपिया यानी अफ्रीका में हुआ था। उन्होंने व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में रोमन साम्राज्य और प्राचीन भारत के साथ गठजोड़ कायम किए। व्यापार और वाणिज्य की सुविधा के लिए उन्होंने अपने सिक्के भी स्वयं ढाले। वे अरब प्रायद्वीप की राजनीति में प्रविष्ट हुए और उन्होंने हिम्याराइट राज्य को पराजित किया। अपने शिखर काल के दौरान अक्सुम सभ्यता के लोग इथियोपिया, इरीट्रिया, जिबूति, सूडान, सोमालिया, यमन, सऊदी अरब और मिस्र के भूभागों को नियन्त्रित करने के योग्य थे। इतिहासकार इन्हें विश्व की सर्वाधिक शक्तिशाली सैन्य शक्तियों में से एक मानते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) मिस्र के नवाचारों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) "बेबीलोनिया" से आप क्या समझते हैं? बेबीलोनिया की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) प्राचीन उप-सहारा अफ्रीका के साम्राज्य पर एक टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8.4 प्राचीन भारत

प्राचीन भारत में वर्तमान समय के अनेक देश; जैसे – भारत, पाकिस्तान, नेपाल और बांग्लादेश शामिल थे। प्राचीन भारत में अनेक राजवंशों और सरकारों का प्रादुर्भाव हुआ जिनका विस्तार दक्षिण एशिया तक था। भारत के इतिहास का प्रारम्भ मनुष्यों की आदिम बस्तियों के प्रमाणों से होता है, जो लगभग 75,000 वर्ष या इससे भी अधिक पहले अस्तित्व में थीं। सिन्धु घाटी की सभ्यता दक्षिण एशिया की प्रमुख सभ्यता थी जिसका विकास 3300 ई. पू. से 1300 ई. पू. के मध्य भारत के पश्चिमोत्तर हिस्से (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था।

यह सभ्यता भारत के उत्तरी और पश्चिमी केन्द्रीय भाग तक विस्तृत थी। यह एक ठेठ नगरीय संस्कृति थी जो तकनीकी में अत्यधिक उन्नत थी। इस तकनीकी का प्रयोग हस्तशिल्प और धातुकर्म में किया जाता था। हड़प्पा काल (2600 ई. पू. से 1900 ई. पू.) के दौरान यह सभ्यता अपने विकास के चरम पर थी। सिन्धु सभ्यता के नगर इतिहास में अपने नगर नियोजन, घरों के प्रतिमानों और पकी हुई ईंटों, जलापूर्ति प्रणाली, जल-निकास व्यवस्था और विशाल भवनों के समूह के लिए उल्लेखनीय हैं। दूसरी सहस्राब्दी ई.पू. में इस कांस्ययुगीन सभ्यता का अन्त हो गया और वैदिक काल के दौर का अभ्युदय हुआ। यह सभ्यता गंगा के विशाल मैदानों तक विस्तृत थी और इसने नए राजनीतिक विन्यासों को जन्म दिया, जिन्हें महाजनपद कहा जाता है। मगध इन्हीं महाजनपदों में से एक था जहाँ छठवीं और पाँचवीं शताब्दी ई. पू. में महावीर और गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था। महावीर और गौतम बुद्ध ने बाद में क्रमशः जैन और बौद्ध धर्म की स्थापना की। यह काल साथ-साथ विकसित हो रही भारतीय, ईरानी और यूनानी सभ्यताओं के अद्‌भुत मिश्रण का भी साक्षी रहा। यह एक वर्णसंकर संस्कृति थी जिसे यूनानी-बौद्ध (ग्रीको बुद्धिज्म) के नाम से जाना गया। बाद में इस वर्णसंकर संस्कृति में बौद्ध धर्म की महायान शाखा का विकास हुआ। 322 ई. पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित मौर्य साम्राज्य का अधिकार चौथी से तीसरी शताब्दी ई. पू. के बीच भारत के अधिकांश भूभाग पर था। मौर्य साम्राज्य अकेला ऐसा साम्राज्य था जिसकी राजनीतिक सत्ता मध्य एशिया और मध्य पूर्व, मिस्र और सीरिया, थाइलैण्ड, चीन और बर्मा तक विस्तृत थी। अशोक महान के शासनकाल में बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन दिया गया। सम्पूर्ण साम्राज्य चार प्रान्तों में इसके विभाजन द्वारा नियन्त्रित किया जाता था – तोशाली, उज्जैन, सुवर्णगिरि और तक्षशिला। पाटलिपुत्र इस साम्राज्य की राजधानी थी। मौर्य वंश के पतन के बाद शुंग सत्ता में आए जिन्होंने 185 ई. पू. से 73 ई. पू. के बीच उत्तरी केन्द्रीय और पूर्वी भारत तथा पश्चिमी भारत का नियन्त्रण किया। शुंग साम्राज्य इतिहास में अनेक युद्धों को लड़ने के लिए जाना जाता है। शुंग राजवंश कला, शिक्षा और दर्शन के क्षेत्र में अपने अनगिनत योगदानों के कारण उल्लेखनीय है। योगसूत्र, महाभाष्य, अष्टाध्यायी, मालविकाग्निमित्रम जैसी साहित्यिक कृतियों का प्रणयन शुंग राजवंश के संरक्षण में ही किया गया था।

चौथी और पाँचवीं शताब्दियों के दौरान गुप्त साम्राज्य अस्तित्व में आया। विज्ञान, तकनीकी, कला, अभियान्त्रिकी, साहित्य, तर्कशास्त्र, गणित, खगोलिकी, धर्म और दर्शन के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के कारण गुप्त काल को भारत का स्वर्णकाल कहा गया है। इस काल में हिन्दू धर्म का भी उत्थान हुआ। भारतीय संस्कृति के घटकों; जैसे धर्म, प्रशासन और ज्ञान आदि का एशिया के अधिकांश भाग में प्रचार-प्रसार इसी काल में हुआ। चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वित्तीय गुप्तकाल के प्रमुख शासक थे। इस काल ने शानदार कला और स्थापत्य, मूर्तिकला और चित्रकारी के रूप में उल्लेखनीय योगदान दिया। कालिदास, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, विष्णु शर्मा और वात्स्यायन जैसे प्रख्यात विद्वान इसी काल में हुए। भारत में प्रचलित विज्ञान के साथ-साथ राजनीतिक प्रशासन को भी गुप्त काल में नवीन ऊँचाइयाँ मिलीं। नए सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अपने पोतों के माध्यम से वे बर्मा, श्रीलंका, इण्डोनेशिया और चीन तक गए।

दक्षिण भारत में चोल साम्राज्य ने शासन किया किन्तु उन्हें लोकप्रियता नौवीं शताब्दी में, चोल साम्राज्य के दो प्रख्यात शासकों, राजराज चोल और उनके पुत्र राजेन्द्र चोल के शासनकाल में मिली। इन दो शासकों के अन्तर्गत चोल साम्राज्य ने सैन्य, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। राजराज चोल ने प्रायद्वीपीय भारत और श्रीलंका के कुछ भाग पर अधिकार किया जबकि उनके पुत्र राजेन्द्र चोल ने बर्मा, वियतनाम, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूहों, लक्षद्वीप, सुमात्रा, जावा, मलाया और पीगू द्वीपों को

पराजित किया था। तेरहवीं शताब्दी में चोल साम्राज्य का अन्त हो गया और उनकी जगह पाण्ड्यों ने ले ली। मन्दिर-निर्माण की वास्तुकला में चोलों के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इसके अतिरिक्त उन्होंने तमिल साहित्य को भी संरक्षण प्रदान किया। दक्षिण भारत में चालुक्य, पल्लव, पाण्ड्य और चेर जैसे अनेक अन्य साम्राज्यों का भी प्रादुर्भाव हुआ। 77 ई. में रोमवासियों के साथ सामुद्रिक व्यापार सम्पर्क भी स्थापित किया गया था।

8.5 प्राचीन यूरोप

प्राचीन यूरोप में यूनान और रोम की सभ्यताएँ सम्मिलित हैं। प्राचीन यूनान का इतिहास, आठवीं से छठवीं शताब्दी ई.पू. के मध्य से, आर्काइक काल से शुरू होता है और 146 ई. पू. तक जाता है जब रोमन लोगों ने कोरिंथ की निर्णायक लड़ाई में इसका अधिग्रहण कर लिया था। प्राचीन यूरोप में शासन करने वाले साम्राज्यों और राजवंशों का संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया गया है :

8.5.1 एथेंस

प्राचीन एथेंस लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व आबाद था। प्रथम सहस्राब्दी ई. पू. में यह प्राचीन यूनान का एक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय रूप से प्रगतिशील नगर था। पाँचवीं शताब्दी ई.पू. के दौरान इसके सांस्कृतिक विकास ने इसे पश्चिमी सभ्यता की श्रेणी में खड़ा कर दिया। अनेक अवसरों पर इसका उत्थान और पतन भी हुआ। इसने बिजेण्टाइन के युग में और धर्मयुद्धों के काल में नाम और यश हासिल किया। मध्यकाल में इतालवी व्यापार के कारण यह एक समृद्ध नगर था। इतिहासकारों द्वारा 480 ई. पू. से 404 ई. पू. तक की अवधि यानी पेरीक्लीज़ के काल को एथेंस का स्वर्णकाल माना जाता है। पेरीक्लीज़ के काल में एथेंस में राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सुधार हुए। डेलियन लीग (एथेंस के नगर-राज्यों का एक गठबन्धन) ने 480 ई. पू. में फारसियों को सलामिस नामक स्थान पर पराजित किया था। धीमे-धीमे यह गठबन्धन एथेंस के साम्राज्य में रूपान्तरित हो गया लेकिन गठबन्धन के सदस्यों के बीच समता को कायम नहीं रखा जा सका और परिणामस्वरूप उन्होंने डेलियन लीग को पुनर्व्यवस्थित किया और डेलोस से हटकर एथेंस चले गए। एथेंस में ही उन्होंने दुर्गनुमा एक्रोपोलिस की स्थापना की। समस्त प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद एथेंस कला, दर्शन और साहित्य के एक केन्द्र के रूप में लोकप्रिय हुआ। एरिस्टोफेनीज़ और सोफ़ोक्लीज़ जैसे नाट्यकार और अरस्तू, प्लेटो और सुकरात जैसे दार्शनिक इस विश्व को एथेंस की देन हैं।

8.5.2 स्पार्टा

मूलतः यह लैकोनिया में स्थित और सैन्य-प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में समर्पित एक डोरियन यूनानी सैन्य राज्य था। एथेंस और फारस के साम्राज्यों को पराजित करने के कारण यूनानी जगत में स्पार्टा अपनी भयानक सेना के लिए विख्यात था। 631 ई. पू. में लड़ा गया मेसेनियाई युद्ध स्पार्टा के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ क्योंकि इस युद्ध के बाद उन्हें यह प्रतिष्ठा मिल गयी कि उनके जमीनी लड़ाके अजेय हैं। थर्मोपायले की लड़ाई ने फारस के विरुद्ध एक यूनानी गठबन्धन के सृजन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। परिणामस्वरूप यूनानियों की विजय और यूरोप में प्रसार करने के फारसी स्वप्न की समाप्ति के साथ यूनान और फारस के बीच होने वाले युद्ध का समापन हो गया। परवर्ती चिरसम्मत कालों में एथेंस, थेबीज और फारस आपस में एक-दूसरे से लड़ते रहे। 404 ई. पू. में पेलोपोनेशिया के निर्णायक युद्ध में स्पार्टा का गौरव एक नौसैनिक शक्ति के रूप में उभरा। पाँचवीं शताब्दी तक स्पार्टा ने फारस और एथेंस, दोनों, के साम्राज्यों को पराजित कर दिया था। यह स्पार्टा के वर्चस्व को रेखांकित करता है।

8.5.3 मकदूनिया

यह प्राचीन राज्य प्राचीन यूनान के उत्तरी भाग में स्थित था। यह एपिरस और थ्रेस के बीच में पड़ता था। एक छोटी-सी समयावधि के लिए यह विश्व का एक बहुत शक्तिशाली राज्य बन गया था क्योंकि सिकन्दर महान ने ऐकेमनी साम्राज्य समेत बहुत सारे क्षेत्रों को पराजित कर दिया था और यूनानी (हेलेनिस्टिक) काल की स्थापना की थी। फिलिप द्वितीय के व्यक्तित्व और उसकी नीतियों के कारण ही मकदूनिया का उत्थान हुआ। उसके सैन्य अभ्यासों के कारण मकदूनिया महान बना। यह उसके प्रमुख योगदानों में शामिल है कि उसने थल सेना में सैन्य-व्यूह से युक्त विशिष्ट सैनिक सेवाओं की स्थापना की, जिसके सैनिक लम्बी बरछी से लैस रहा करते थे। इस बरछी को "सरिसा" कहा जाता था। उसके पुत्र सिकन्दर महान ने अपने पिता की उपलब्धियों को आगे बढ़ाया। उसने अपने भूभाग का विस्तार यूनान से भी आगे जाकर किया और फारसी साम्राज्य तथा मिस्र के शासकों को पराजित किया और भारत तक आ पहुँचा। सिकन्दर महान की मृत्यु के बाद उसका साम्राज्य बहुत सारे यूनानी राज्यों (regimes) में विभक्त हो गया। एण्टीपैट्रिड राजवंश के काल में मकदूनिया का पतन हो गया और बहुत कम समय में एण्टीगोनिड राजवंश ने इस पर अधिकार कर लिया।

8.5.4 यूनानी (Hellenistic) राज्य

सिकन्दर की मृत्यु के सन्दर्भ में लिखे गए ग्रन्थों के अनुसार, उसने इच्छा व्यक्त की थी कि उसकी मृत्यु के बाद गद्दी पर जो व्यक्ति बैठे उसे शक्तिशाली और अत्यधिक सक्रिय होना चाहिए। इस कारण उसके अपने सेनापतियों के बीच डायडोची के युद्ध प्रारम्भ हो गए जो चालीस वर्ष तक चलते रहे। यह चार प्रमुख प्रदेशों में विभाजित था : मैसेडोन और केन्द्रीय यूनान का एण्टीगोनियाई (Antigonid) राजवंश; मिस्र का टॉलेमियाई राजवंश; सीरिया और मेसोपोटामिया का सेल्यूसिड राजवंश और अनातोलिया का ऐतेलिद (Attalid) राजवंश। परवर्ती विकासों के चलते दो अन्य राज्यों का भी उद्भव हुआ जिन्हें यूनानी-बैक्ट्रियाई (Greco & Bactrian) और हिन्द-यूनानी (Indo & Greek) राज्य कहा जाता है। दर्शन और अलंकार-शास्त्र के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट स्थिति को कायम रखते हुए एथेंस ने अपने वैभव को पुनः हासिल किया। सिकन्दरिया यूनानियों की शिक्षा का एक केन्द्र बन गया, जहाँ एक विशाल पुस्तकालय था। इस पुस्तकालय में सात लाख से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध थीं। परगामोन नगर पुस्तक-उत्पादन का एक लोकप्रिय केन्द्र बना जहाँ दो लाख से अधिक पुस्तकों से युक्त एक पुस्तकालय मौजूद था। रोड्स के द्वीप को राजनीति और राजनय के एक महत्वपूर्ण स्थल के रूप में लोकप्रियता मिली। एण्टियोक ने एक महानगर और यूनानी शिक्षा के एक केन्द्र के रूप में अपनी स्थिति को, यहाँ तक कि ईसाइयत के दौर में भी, बरकरार रखा।

8.5.5 सेल्यूसिड (Seleucid) राज्य

यह एक यूनानी (Hellenistic) साम्राज्य था जिसका जन्म ऐकेमनी साम्राज्य के बिखरने के बाद हुआ था। यह निकट पूर्व में अवस्थित था और यूनानी (Hellenistic) संस्कृति अर्थात यूनानी परम्पराओं का अनुसरण करता था। यूनान में सेल्यूसिड लोगों के विस्तार को रोमनों द्वारा रोक दिया गया। दूसरी शताब्दी ई. पू. में, मिथ्रीडेटीज़ (Mithridates) प्रथम के नेतृत्व में पार्थियनों ने पूर्वी हिस्से के अधिकांश भाग को पराजित कर दिया। आर्मेनियाई राजा टिग्रानीज़ महान ने सेल्यूसिड राजाओं के पिछले भाग पर आक्रमण किया और अन्ततः रोमन सेनापति पोम्पे ने टिग्रानीज़ को उखाड़ फेंका।

8.5.6 टॉलेमियाई (Ptolemaic)

यह यूनान का एक शाही परिवार था जिसने यूनानी (Helleinistic) काल के दौरान मिस्र पर शासन किया था। इन्हें लेजिड्स के नाम से भी जाना जाता है। सिकन्दर महान की मृत्यु के पश्चात, 323 ई. पू. में टॉलेमी को मिस्र का क्षत्रप नियुक्त किया गया था। उसने स्वयं को राजा घोषित कर दिया और मिस्रवासियों ने उसे फैरो के उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार कर लिया। 30 ई. पू. में रोमनों द्वारा पराजित कर दिए जाने तक टॉलेमी का परिवार मिस्र पर शासन करता रहा। टॉलेमियाई राज्य एक शक्तिशाली यूनानी (Helleinistic) राज्य था जिसमें सीरिया का दक्षिणी भाग, साइरीन और न्यूबिया के क्षेत्र सम्मिलित थे। सिकन्दरिया इसकी राजधानी बना और इसका विकास यूनानी संस्कृति और व्यापार के एक केन्द्र के रूप में हुआ। मिस्र में यूनानी संस्कृति, यहाँ तक कि मुसलमानों द्वारा इस क्षेत्र को पराजित कर दिए जाने के बाद भी, भलीभाँति जारी रही। मिस्रवासियों द्वारा सतत रूप से किए गए अनेक विद्रोहों के कारण तथा बाहरी शक्तियों के साथ लड़े जाने वाले युद्धों के अतिरिक्त गृह युद्ध के कारण टॉलेमियाई लोगों का पतन हो गया और रोम द्वारा इन्हें उखाड़ फेंका गया।

8.5.7 रोमन

रोमन साम्राज्य यूरोप की सर्वाधिक सशक्त, सर्वाधिक विशाल और सर्वाधिक शक्तिशाली सभ्यता था। 27 ई. पू. तक आधे यूरोप, उत्तरी अफ्रीका और मध्य पूर्व के प्रमुख भागों पर इसका मजबूत नियन्त्रण था। आगस्टस के समय और पश्चिमी साम्राज्य के पतन के काल से ही रोमनों ने पश्चिमी यूरेशिया पर अपना प्रभुत्व बनाए रखा था। रोमनों का विस्तार बहुत पहले ही प्रारम्भ हो गया था और जब ट्राजन ने आर्मेनिया और मेसोपोटामिया को पराजित किया, तब 113 ई. में सम्राट ट्राजन के नेतृत्व में यह साम्राज्य अपने शिखर पर था। ट्राजन के शासनकाल में रोमन साम्राज्य ने जिन नवीन ऊँचाइयों को स्पर्श किया, उन ऊँचाइयों तक भविष्य में यह साम्राज्य फिर कभी नहीं पहुँच सका। रोमन साम्राज्य के इतिहास में "पाँच श्रेष्ठ सम्राटों" का काल अत्यधिक उल्लेखनीय है। हदरियान को अपने शासनकाल में प्रमुख सैन्य संघर्षों की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। नर्वा एन्तोनाइन (The Nerva Antonine) राजवंश के दौरान लगातार सात रोमन साम्राज्यों का उद्‌भव हुआ, जिन्होंने रोमवासियों पर 96 ई. से 192 ई. तक शासन किया। हालाँकि उनसठ लाख (5,900,000) वर्ग किलोमीटर के भौगोलिक क्षेत्र पर नियन्त्रण स्थापित करने में रोमन साम्राज्य सफल रहा। सरकार, संस्कृति, तकनीकी, स्थापत्य, भाषा, धर्म, कानून, कला और सैन्य-विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन रोमवासियों का योगदान जारी रहा। जो परम्परा अत्यधिक प्राचीन समय में शुरू हुई थी, वह आज भी पश्चिमी सभ्यता के रूप में प्रचलित है।

8.6 प्राचीन यूरेशियाई स्टेपीज़

इसमें निम्नलिखित राजवंश सम्मिलित हैं :

8.6.1 सीथियन

पूर्वोत्तर यूरोप और काला सागर के उत्तरी तट को मिलाकर जो क्षेत्र बनता है, उसे प्राचीन यूनानी लोग सीथिया कहा करते थे। ग्यारहवीं शताब्दी ई. पू. से दूसरी शताब्दी ई. के दौरान सीथियनों ने स्वयं को सीथिया में स्थापित किया।

8.6.2 सरमातियन

ये ईरानी लोग थे जो पाँचवीं शताब्दी ई. पू. से चौथी शताब्दी ई. के बीच मध्य एशिया में निवास किया करते थे। वे एक हिन्द-यूरोपीय या भारोपीय (Indo & European) भाषा

बोलते थे, जिसे "सीथियन" कहा जाता था। छठवीं शताब्दी ई. पू. के दौरान उन्होंने पश्चिम की ओर प्रवास करना शुरू कर दिया था। उनका यह प्रवास दूसरी शताब्दी ई. पू. तक सीथियनों के लिए प्रभुत्वशाली स्थिति का कारण सिद्ध हुआ। सरमातियन लोग अग्नि के देवता के महान उपासक थे और उनकी महिलाएँ युद्धों में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया करती थीं। प्रथम शताब्दी ई. के दौरान सरमातियन लोग विस्चुला नदी से लेकर डेन्यूब नदी के मुहाने के बीच तथा पूर्व दिशा में वोल्गा और दक्षिण की ओर काकेशस तक के भूभाग में फैल गए। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, तेरह लाख दो हजार सात सौ चौंसठ (1,302,764) वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल पर अधिकार करने वाले सरमातिया दो भागों में विभाजित थे : यूरोप के सरमातिया और एशिया के सरमातिया।

8.6.3 झियोंग्नू (Xiongnu) साम्राज्य

यह एक यायावर साम्राज्य था जिसका उद्‌भव केन्द्रीय एशिया में हुआ था। वे या तो एक ईरानी या फिर एक येनिसियाई (Yeniseian) भाषा बोलते थे। तीसरी शताब्दी ई.पू. के दौरान टाउमेन के नेतृत्व में वे आधुनिक मंगोलिया को पराजित करने योग्य हो गए थे। मोडू के शासनकाल के दौरान उन्होंने डोंघू के साथ-साथ युएझी को पराजित किया। चीन के नगरों की झियोंग्नू से सुरक्षा करने के लिए चीन की महान दीवार का निर्माण किया गया लेकिन प्रथम शताब्दी ई. पू. में झियोंग्नू साम्राज्य का विभाजन दो भागों में हो गया और अन्ततः हान-झियोंग्नू युद्ध में पराजय के पश्चात उनका अन्त हो गया।

8.6.4 हूण (Hunnic) साम्राज्य

हूण घुड़सवारी और तीरंदाजी में निपुण यायावर लोग थे और तुर्क, मंगोल और यूराल भाषाएँ बोलते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने एलनसैण्ड गोथों को हराकर पूर्वी यूरोप में एक साम्राज्य की स्थापना की थी। 370 ई. के आसपास हूणों के उत्थान ने गोथिक राजवंश को चकित कर दिया था। रोमन भूभाग, विशेषतौर पर बाल्कन की तरफ प्रवास को उन्होंने तीव्र किया और इसके परिणामस्वरूप पश्चिमी रोम का साम्राज्य ढह गया। रुगिला की मृत्यु के पश्चात, उसके भाई के तीन पुत्रों, जिनके नाम मुण्डजुक, ऐतिला और ब्लेडा थे, ने एकताबद्ध हूण जनजातियों की जिम्मेदारी सँभाली। ऐतिला एक शक्तिशाली शासक था और उसने 434 ई. से 453 ई. तक उन्नीस वर्ष शासन किया। बाल्कन पर उसने दो बार हमला किया तथा गॉल और ऑरलियंस की दिशा में आगे बढ़ा किन्तु कैलोन्स (Chalons) की लड़ाई में वह पराजित हो गया। उसकी मृत्यु के बाद हूणों के युग का समापन हो गया। हालाँकि उसके शासन के दौरान यह साम्राज्य जर्मनी से लेकर यूराल नदी तक और डेन्यूब नदी से लेकर बाल्टिक सागर तक विस्तृत था।

बोध प्रश्न 2

1) भारत में प्राचीन राजवंशों के उत्थान और पतन पर एक टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) स्पार्टा की सैन्य उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सरमातियन कौन थे? उनका उद्‌भव कहाँ हुआ था?

.....

.....

.....

.....

.....

8.7 सारांश

साम्राज्यों का गठन इसके विविधतापूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और नृजातीय घटकों के कारण घटित होता है। साम्राज्य शब्द के स्थान पर उपनिवेशवाद शब्द का प्रयोग भी कर दिया जाता है लेकिन दोनों के अर्थों में बहुत अन्तर है। यदि हम इतिहास में पीछे जाएँ तो पाते हैं कि प्राचीन काल में, बिल्कुल पहली सभ्यता के समय से ही अनेक साम्राज्यों का अस्तित्व था। इस इकाई में हमने मिस्र, सुमेर, मितन्नी, बेबीलोनिया, असीरिया, फिनिशिया, फारस, उप-सहारा अफ्रीका और प्राचीन भारत जैसे अनेक प्रारम्भिक साम्राज्यों के उत्थान और पतन की चर्चा की है। इसके अतिरिक्त, प्राचीन यूरेशियाई स्टेपीज़ और प्राचीन यूरोप पर भी चर्चा की गयी है।

8.8 शब्दावली

सुमेर : दजला और फरात नदियों के मध्य स्थित क्षेत्र से इतिहासकार भलीभाँति परिचित हैं। यह क्षेत्र प्राचीन सभ्यता का एक महत्वपूर्ण स्थल था। इतिहासकार इस क्षेत्र को सुमेर कहते हैं, जो मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक) के दक्षिणी भाग में अवस्थित था।

बेबीलोनिया : बेबीलोन नाम की उत्पत्ति अक्कद भाषा के शब्द 'बाव-इल' अथवा 'बाविलिम' से हुई है जिसका अर्थ है "ईश्वर का द्वार" या "देवताओं का द्वार"। यह लटकते हुए बगीचों (हैंगिंग गार्डेन्स) के लिए विख्यात था। ये बगीचे मनुष्यों द्वारा बनायी गयी ड्योढ़ी पर लगाए गए पेड़-पौधों और वनस्पतियों के समूह की तरह थे, जिनकी सिंचाई यन्त्रों से की जाती थी। लटकते हुए इस बगीचे को विश्व के सात आश्चर्यों की सूची में स्थान प्रदान किया गया है। बेबीलोन, अठारहवीं शताब्दी ई. पू. से छठवीं शताब्दी ई. पू. के बीच अस्तित्वमान प्राचीन मेसोपोटामिया में स्थित एक राज्य (किंगडम) था।

फिनिशिया : फिनिशिया की प्राचीन सभ्यता का प्रादुर्भाव 1500 ई. पू. से 322 ई. पू. के दौरान भूमध्य सागर के माध्यम से होने वाले समुद्री व्यापार के कारण हुआ। यह सभ्यता वर्तमान समय के सीरिया, लेबनान और उत्तरी इजरायल वाले क्षेत्रों तक फैली।

फारस : फारसी सभ्यता पदबन्ध का प्रयोग दो अलग-अलग किन्तु अंतर्संबंधित सांस्कृतिक इकाइयों को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है : पूर्व-इस्लामी फारसी सभ्यता और इस्लामी फारसी सभ्यता। पूर्व-इस्लामी फारसी सभ्यता में ऐकेमनी शासकों के फारसी साम्राज्यों का काल सम्मिलित है जिन्होंने 550 ई.पू. से 330 ई. पू. के बीच शासन किया जबकि पार्थियन और ससानी साम्राज्यों ने 140 ई. पू. से 640 ई. तक शासन किया।

स्पार्टा : मूलतः यह लैकोनिया में स्थित और सैन्य-प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में समर्पित एक डोरियन यूनानी सैन्य राज्य था। एथेंस और फारस के साम्राज्यों को पराजित करने के कारण यूनानी जगत में स्पार्टा अपनी भयानक सेना के लिए विख्यात था।

मकदूनिया : यह प्राचीन राज्य प्राचीन यूनान के उत्तरी भाग में स्थित था। यह एपिरस और थ्रेस के बीच में पड़ता था। एक छोटी-सी समयावधि के लिए यह विश्व का एक बहुत शक्तिशाली राज्य बन गया था क्योंकि सिकन्दर महान ने ऐकेमनी साम्राज्य समेत बहुत सारे क्षेत्रों को पराजित कर दिया था और यूनानी (हेलेनिस्टिक) काल की स्थापना की थी।

8.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उप-भाग 8.2.1 देखिए।

2) उप-भाग 8.2.4 देखिए।

3) भाग 8.3 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 8.4 देखिए।

2) उप-भाग 8.5.2 देखिए।

3) उप-भाग 8.6.2 देखिए।

इकाई 9 बैजन्तिया (बिजेण्टाइन), ईसाई और इस्लामी सभ्यताएँ

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 बिजेण्टाइन

- 9.2.1 जस्टीनियन प्रथम
- 9.2.2 दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दियों का काल
- 9.2.3 धर्मयुद्धों का प्रारम्भ
- 9.2.4 बिजेण्टाइन का योगदान

9.3 ईसाई सभ्यता

9.4 ईसाइयत का प्रसार

9.5 इस्लामी सभ्यता

9.6 प्रमुख साम्राज्य और इस्लामी आन्दोलन

9.7 इस्लाम का विस्तार

9.8 सारांश

9.9 शब्दावली

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप इस योग्य हो जाएँगे कि आप :

- बिजेण्टाइन के अर्थ और इसके विकास को समझ सकें;
- आधुनिक विश्व के लिए बिजेण्टाइन के योगदान को जान सकें;
- ईसाई सभ्यता और इसके प्रसार पर चर्चा कर सकें; और
- इस्लामी सभ्यता और इस्लाम के विस्तार के बारे में जान सकें।

9.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में हमने सभ्यता के अर्थ और अभिलक्षणों, सामाजिक दशाओं और पर्यटन, प्रारम्भिक सभ्यताओं के उत्थान-पतन और चीन की सभ्यता पर विस्तृत रूप से चर्चा की है। वर्तमान इकाई में हम बिजेण्टाइन (बैजन्तियाई) और इसके विकास, बिजेण्टाइन के योगदान, ईसाई सभ्यता और इस्लामी सभ्यता पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

9.2 बिजेण्टाइन

"बिजेण्टाइन" शब्द की उत्पत्ति बिजेण्टियम शब्द से हुई है जिसका प्रयोग बाइजस नामक व्यक्ति द्वारा स्थापित की गयी एक प्राचीन यूनानी बस्ती को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता था। यह बास्पोरस जलसन्धि के पास यूरोप की तरफ अवस्थित था। बास्पोरस

जलसन्धि का प्रयोग एशिया और यूरोप के बीच व्यापार के लिए यातायात के एक महत्वपूर्ण बिन्दु के रूप में किया जाता था। रोमन सम्राट कांस्टैण्टाइन प्रथम द्वारा 330 ई. में न्यू रोम की स्थापना करने के लिए इसी स्थल का चुनाव किया गया था और इस कारण इस नगर को लोकप्रियता मिली। इसकी राजधानी कांस्टैण्टीनोपल (कुस्तुनतुनिया) थी। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कांस्टैण्टाइन ही वह सम्राट था जिसने ईसाइयत स्वीकार की थी और इसे रोम का आधिकारिक धर्म घोषित किया था। कांस्टैण्टीनोपल के निवासियों को क्रिश्चियन यानी ईसाई कहा गया जबकि पूर्वी रोमन साम्राज्य का शेष भाग रोमवासियों की भूमि के रूप में ही लोकप्रिय बना रहा। कांस्टैण्टाइन ने एकीकृत रोमन साम्राज्य पर शासन किया था लेकिन यह शासन लम्बे समय तक नहीं चल सका क्योंकि उसकी मृत्यु के बाद 337 ई. तक यह साम्राज्य दो भागों में विभाजित हो गया : पूर्वी और पश्चिमी। उसके उत्तराधिकारी वैलेण्टाइनियन प्रथम ने 364 ई. में पश्चिमी हिस्से पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया जबकि उसके भाई वैलेन्स को पूर्व का प्रभार दिया गया।

आने वाली कुछ शताब्दियों में इन दोनों नगरों का दुर्भाग्य शुरू हुआ क्योंकि पश्चिमी हिस्से को जर्मन आक्रमणकारियों के लगातार होने वाले हमले झेलने पड़े। जर्मन आक्रमणकारियों ने इन नगरों के शासकों को बुरी तरह परास्त कर दिया और सिर्फ इटली को छोड़कर समस्त भूभाग पर अधिकार कर लिया। इटली पर रोमनों का शासन बना रहा। लेकिन 476 ई. तक ओडेसर नामक एक बर्बर द्वारा अन्तिम रोमन सम्राट रोमुलस आगस्टस को परास्त कर देने के कारण रोम की आशा की अन्तिम किरण भी समाप्त हो गयी। हालाँकि, रोमन साम्राज्य का पूर्वी भाग सुरक्षित बना रहा और इसको क्षति नहीं पहुँचायी जा सकी क्योंकि इसकी विशिष्ट भौगोलिक अवस्थिति इसकी सुरक्षा और संरक्षा को सुनिश्चित करती थी। पूर्वी भाग की कम सुभेद्यता के लिए केवल विशिष्ट भौगोलिक स्थिति ही जिम्मेदार नहीं थी, बल्कि सशक्त प्रशासन और अत्यधिक समृद्धि के साथ-साथ आन्तरिक राजनीतिक स्थायित्व का भी इसमें योगदान था। पूर्वी सम्राटों ने आर्थिक संसाधनों का प्रबन्धन भी कुशलतापूर्वक किया था और बाहरी आक्रमण से निपटने के लिए निवासीजनों पर उनका नियन्त्रण भी अधिक था। इसी कारण बिजेण्टियम का अस्तित्व शताब्दियों तक बना रहा। यहाँ तक कि रोमन साम्राज्य के पतन के बाद भी इसका अस्तित्व बना रहा। रोमन कानून और उनकी राजनीतिक व्यवस्था को तो इन्होंने कमोबेश यथारूप स्वीकार कर लिया था किन्तु अपनी आधिकारिक भाषा उन्होंने लैटिन को बनाया। हालाँकि यूनानी भाषा भी प्रचलित थी और विद्यार्थी यूनानी इतिहास, संस्कृति और साहित्य का भी अध्ययन करते थे। बिजेण्टेयिम में 451 ई. में ईसाइयत और चाल्सडन की परिषद को अपनाया गया। ईसाइयत पाँच बड़े-बड़े पादरी-कार्यालयों में विभाजित थी, जिनके नाम रोम, कांस्टैण्टीनोपल, सिकन्दरिया, एण्टियोक और यरुशलम थे। पाँच पादरियों की नियुक्ति की गयी थी ताकि प्रत्येक कार्यालय को सँभाला जा सके। यद्यपि सातवीं सदी में इस्लामिक साम्राज्य ने सिकन्दरिया, एण्टियोक और यरुशलम पर अधिकार कर लिया लेकिन बिजेण्टियन सम्राट कांस्टैण्टीनोपल के पद को बनाए रखने में सफल रहा और वह पूर्वी ईसाइयों का आध्यात्मिक नेता बना।

9.2.1 जस्टीनियन प्रथम

जस्टीनियन प्रथम बिजेण्टाइन साम्राज्य का प्रथम शासक था। उसने 527 ई. से 565 ई. तक शासन किया था। उसके शासनकाल में जस्टीनियन सेना ने पश्चिमी रोमन साम्राज्य के भूक्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। उसका साम्राज्य उत्तरी अफ्रीका तक विस्तृत था। उसे अनेक भव्य इमारतें बनवाने का श्रेय जाता है; जैसे - पवित्र ज्ञान का गिरजाघर या सेण्ट सोफिया का गिरजाघर। रोमन कानून में सुधार करने और उसे संहिताबद्ध करने का श्रेय भी उसे दिया जाता है। उसने बिजेण्टाइन की एक विधि संहिता की स्थापना की जिसके

कारण बिजेण्टाइन को राज्य की आधुनिक अवधारणा के अनुसार ढलने में सहायता मिली। युद्धों के कारण अपने जीवन के अन्तिम चरण में उसने बिजेण्टाइन को गम्भीर वित्तीय संकट में डाल दिया और साम्राज्य को चलाने के लिए उसके उत्तराधिकारियों को बिजेण्टाइन के मूल निवासियों पर भारी कर लगाने के लिए विवश होना पड़ा। सातवीं और आठवीं शताब्दी के दौरान फारसी और दासजनों द्वारा किए गए कठोर आक्रमण तथा कमजोर आर्थिक स्थिति के साथ-साथ राजनीतिक अस्थायित्व ऐसे प्रमुख कारण रहे जिनके चलते साम्राज्य का पतन हो गया। शताब्दी के अन्त तक इस्लामी ताकतों ने बिजेण्टाइन से सीरिया, मिस्र और उत्तरी अफ्रीका का नियन्त्रण छीन लिया। 730 ई. तक आते-आते बिजेण्टाइन सम्राटों ने एक आन्दोलन चलाया जो धार्मिक चित्रों की उपासना का निषेध करता था। यहाँ तक कि, उन्होंने ऐसे चित्रों की पवित्रता के विचार को भी खारिज कर दिया लेकिन 843 ई. में सम्राट मिशेल तृतीय के शासनकाल में गिरजाघर की परिषद ने ऐसे प्रतिबन्धों को खारिज कर दिया और धार्मिक चित्रों के प्रदर्शन की अनुमति प्रदान कर दी।

9.2.2 दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी का काल

दसवीं शताब्दी के अन्तिम और ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक समय को इतिहासकारों ने बिजेण्टाइन साम्राज्य के स्वर्णकाल के रूप में व्याख्यायित किया है। बेसिल के शासन के दौरान मकदूनियाई राजवंश को अत्यधिक स्वतन्त्रता हासिल थी। बिजेण्टियन लोगों का व्यापार और वाणिज्य पर और प्रचुर धन-सम्पदा पर अच्छा नियन्त्रण था। यहाँ तक कि किसी भी बिजेण्टियन शासक के समय की तुलना में इस समय बिजेण्टियन लोगों की अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा भी अधिक थी। यह दौर बिजेण्टियन कला और बिजेण्टियन पच्चीकारी के संरक्षण के लिए भी जाना जाता है। इस दौर के शासकों ने प्राचीन यूनानी इतिहास और साहित्य को बढ़ावा देने के साथ-साथ गिरजाघरों, महलों और अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं की मरम्मत और उन्हें बहाल करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। यूनानी को राज्य की आधिकारिक भाषा का दर्जा प्रदान किया जाना और माउण्ट एथोस को संन्यास के एक केन्द्र के रूप में स्थापित किया जाना इस काल की प्रमुख उपलब्धियों में शामिल हैं। हालाँकि बिजेण्टाइन मिशनरियों ने स्लाव लोगों के बीच ईसाइयत का प्रचार-प्रसार और धर्मान्तरण करने के लिए केन्द्रीय और पूर्वी बाल्कन तथा रूस में प्रवेश किया।

9.2.3 धर्मयुद्धों का प्रारम्भ

ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त तक आते-आते धर्मयुद्धों का प्रारम्भ हो गया। धर्मयुद्ध का तात्पर्य मुस्लिमों के विरुद्ध यूरोपीय ईसाइयों द्वारा लड़े गए पवित्र युद्धों से है। इन पवित्र युद्धों के लिए प्रारम्भ में सम्राट एलेक्सियस प्रथम उत्तरदायी था क्योंकि जब वह पश्चिम में तुर्कों के विरुद्ध आगे बढ़ा तो परिणामस्वरूप पोप अर्बन द्वितीय द्वारा पवित्र युद्ध की घोषणा कर दी गयी। 1071 ई. में हुई मेंजीकर्ट की लड़ाई ने अनातोलिया में तुर्कों के बसने का मार्ग खोल दिया। कोमनेनियाई पुनर्स्थापना के युग में साम्राज्य ने अपनी शक्ति दुबारा हासिल कर ली और बारहवीं शताब्दी तक आते-आते कांस्टैण्टीनोपल (कुस्तुनतुनिया) यूरोप का सर्वाधिक समृद्ध और सम्पत्तिशाली नगर बन गया। चौथे धर्मयुद्ध के दौरान 1204 ई. में कांस्टैण्टीनोपल को बुरी तरह लूटा गया। इसका परिणाम यह हुआ कि साम्राज्य बिजेण्टियन-यूनानी और लैटिन क्षेत्रों में विभाजित हो गया। 1261 ई. में कांस्टैण्टीनोपल के निष्कर्षात्मक सुधार के बावजूद, बिजेण्टाइन साम्राज्य का अस्तित्व अगली दो शताब्दियों तक एक छोटे-से प्रतिद्वन्द्वी राज्य की तरह ही रहा। चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी के दौरान इससे सटे भूभागों पर ऑटोमन साम्राज्य ने बलपूर्वक कब्जा कर लिया। 1453 ई. में ऑटोमन साम्राज्य ने कांस्टैण्टीनोपल को जीतकर लूटा और बिजेण्टाइन साम्राज्य का अन्त हो गया। हालाँकि बिजेण्टाइन साम्राज्य के अन्तिम राज्य ट्रेबीजोंड के साम्राज्य पर ऑटोमन लोगों ने 1461 ई.

में अधिकार कर लिया और इस प्रकार सम्पूर्ण बिजेण्टाइन साम्राज्य ऑटोमन लोगों के अधिकार में आ गया था।

यद्यपि बिजेण्टाइन पर ऑटोमन का पूर्णरूपेण कब्जा हो गया था लेकिन बिजेण्टाइन की संस्कृति; जैसे – कला, साहित्य इत्यादि सुदीर्घ काल तक अस्तित्व में बनी रही और इसका प्रभाव रूस, रोमानिया, बुल्गारिया, सर्बिया और ग्रीस जैसे देशों पर भी महसूस किया गया।

9.2.4 बिजेण्टाइन का योगदान

आधुनिक विश्व में बिजेण्टाइन के योगदान का यदि हम विश्लेषण करें तो हमें बिजेण्टाइन लोगों द्वारा निष्पादित की गयी गतिविधियों और प्रयोगों की एक श्रृंखला मिलती है जिन्होंने आने वाले समय के लिए तकनीकी प्रगति की नींव डाली। बिजेण्टाइन विज्ञान प्राचीन दर्शन और अध्यात्म से सम्बद्ध था। मिलेटस के यूनानी गणितज्ञ आइसीडोर ने आर्कमिडीज के कार्यों को संकलित किया। गणितज्ञ लियो ने एक प्रकाशीय टेलीग्राफ का विकास किया था जो संकेत देने वाली मशालों की एक व्यवस्था की तरह था। इसका प्रयोग शत्रुओं द्वारा धावा बोले जाने से बहुत पहले ही सावधान कर देने के लिए खतरे की एक घण्टी की तरह किया जाता था। लटकते हुए यानी पेण्डेण्टिव स्थापत्य की अवधारणा का विकास बिजेण्टाइन लोगों द्वारा किया गया था। जटिल दाँतेदार पहियों से युक्त सौर घड़ी, एण्टीकाइथेरा यान्त्रिकी को लागू करना तथा यान्त्रिक बारीकियों से परिपूर्ण खिलौने उन उच्च कौशलों के कुछ उदाहरण हैं जिन्हें बिजेण्टाइन लोगों द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था। ऐसी यान्त्रिक युक्तियाँ अत्यधिक उत्कृष्ट और परिष्कृत हुआ करती थीं और पहली ही नजर में ये आगन्तुक लोगों पर प्रभाव जमा लेती थीं। बिजेण्टाइन लोगों ने जल की शक्ति के विज्ञान (हाइड्रॉलिक्स) और इसके उपयोग की भी खोज की थी क्योंकि अनाज पीसने के लिए, जलशक्ति का प्रयोग करते हुए, समुद्री जहाज की चक्की का उपयोग करना उन्होंने ही प्रारम्भ किया था।

बीमार लोगों को चिकित्सकीय सहायता और उपचार उपलब्ध कराने में भी बिजेण्टाइन लोग श्रेष्ठ थे। जिस स्थान पर उपचार उपलब्ध कराया जाता था, उसे अस्पताल कहा जाता था। उन्हें मूत्र-विश्लेषण (यूरोस्कोपी) के माध्यम से रोग की पहचान करने का ज्ञान था क्योंकि थियोफिलस प्रोटोस्पाथारियस नामक एक चिकित्सक ने इसका प्रयोग रोगों के निदान के लिए उस समय किया था, जब किसी सूक्ष्मदर्शी का आविष्कार नहीं हुआ था। रोग-निदान की यह तकनीक सम्पूर्ण यूरोप में फैली। वियना डियोस्कोरिडेस, एजिना के पॉल और निकोलस माइरेप्सोस जैसे विख्यात बिजेण्टेनियाई चिकित्सकों ने अपने चिकित्सा सम्बन्धी कार्यों के रूप में उल्लेखनीय योगदान दिया था और विषहर औषध की खोज भी की थी।

सैन्य क्षेत्र में बिजेण्टाइन लोगों ने अपने कौशलों का प्रयोग ग्रेनेड की खोज करने में किया था। कीलों, काँच और विस्फोटकों से भरे हुए मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग भी इस उद्देश्य के लिए किया जाता था। बिजेण्टाइन साहित्य में ऐसे यन्त्रों का भी उल्लेख है जिन्हें हाथ से पकड़कर रखा जाता था और इससे अग्नि-ज्वालाएँ फेंकी जाती थीं। बिजेण्टाइन लोगों ने किलों और दुर्गबन्दियों को ध्वस्त करने में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों का विकास करने में भी हाथ आजमाया था। इससे तोपों का विकास करने के लिए एक आधार मिला। बिजेण्टाइन के पतन-काल के दौरान ट्रेबीजोंड नगर का विकास खगोलिकी और गणित सीखने के एक लोकप्रिय केन्द्र के रूप में हुआ। इसके साथ ही विद्वान लोग यहाँ औषधियों का अध्ययन करने के लिए भी आकृष्ट हुए।

बोध प्रश्न 1

1) बिजेण्टाइन लोग कौन थे? उनका उद्‌भव कहाँ हुआ था?

.....

.....

.....

.....

.....

2) "धर्मयुद्धों के प्रारम्भ" पर एक टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) बिजेण्टाइन लोगों के तकनीकी योगदान का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

9.3 ईसाई सभ्यता

ईसाई सभ्यता में ईसाई धर्म और ईसाई चर्च का, जीसस के समय से लेकर आज तक का, इतिहास शामिल है। जहाँ तक ईसाइयत का सम्बन्ध है, यह एक ऐसा धर्म है जो एक ईश्वर की उपासना में विश्वास रखता है। इस धर्म के मुख्य सिद्धान्त जीसस क्राइस्ट के जीवन, जन्म, मृत्यु, पुनर्जीवन और उनकी शिक्षाओं में निहित हैं। एक्ट्स ऑफ दि एपॉसल्स नामक पुस्तक के अनुसार, सर्वप्रथम ईसाई ऐसे यहूदी लोग थे जिन्होंने इस धर्म को चाहे जन्म से या धर्मान्तरण से स्वीकार किया था और इतिहास में इन प्रारम्भिक ईसाइयों को यहूदी ईसाई कहा जाता है। ईसाई धर्म के सन्देश का प्रचार-प्रसार प्रारम्भ में अरामाइक भाषा में हुआ लेकिन यह यूनानी भाषा में भी फैला। मध्यकाल में ईसाइयत उत्तरी यूरोप और रूस तक विस्तृत थी। अन्वेषण काल तक आते-आते यह धर्म सम्पूर्ण विश्व में फैल गया और विश्व का विशालतम धर्म बन गया जिसके अनुयायी किसी भी दूसरे धर्म के अनुयायियों की संख्या की तुलना में सर्वाधिक हैं। सम्प्रदाय और धर्मशास्त्र के मुद्दों पर उठे संघर्षों के कारण ईसाइयत को तीन मुख्य शाखाओं में विभाजित किया गया है। इनके नाम हैं – रोमन कैथोलिक चर्च, पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च और प्रोटेस्टैण्ट चर्च। न्यू टेस्टामेण्ट प्रथम ईसाई समुदाय के स्थान के रूप में येरुशलम नगर का उल्लेख करता है। येरुशलम को पीटर, जेम्स और जॉन दि एपॉसल (Apostle) का स्थान माना जाता है जो ईसाइयों के नेता थे। एपॉसल यानी देवदूत के समर्थकों ने येरुशलम छोड़ दिया और जीसस के सन्देश को सम्पूर्ण यूनानी

(Hellenistic) जगत में फैलाया। उन्होंने जीसस का प्रचार इस रूप में किया कि वे इजरायल के ईश्वर हैं जिन्हें मनुष्य-जीवन में रूपान्तरित कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने जीसस को एक मसीहा (त्राणकर्त्ता) के रूप में भी प्रचारित किया। उन्होंने प्रथाओं के यहूदी रूपों को अपनाया; जैसे – मरणोत्तर उपासना, अगरबत्तियों का प्रयोग, वेदी का निर्माण, प्रार्थना के दौरान पवित्र संगीत बजाना, पवित्र पुस्तकें पढ़ना, धार्मिक पंचांग का अनुसरण करना, पादरियों और तपस्वियों का पुरुष होना।

रोमन साम्राज्य के दौरान; मूर्तिपूजक लोगों के कारण प्रारम्भ में ईसाइयों को प्रताड़ित किया गया। मूर्तिपूजक लोगों का मानना था कि उनके दुर्भाग्य के लिए ईसाई लोग ही जिम्मेदार हैं और ईसाइयों के कार्यों से उनके ईश्वर का अपमान हुआ है। इसीलिए मूर्तिपूजक लोगों ने सम्राट के अधिकारियों पर ईसाइयों के विरुद्ध कार्रवाई करने दबाव डाला। हालाँकि प्रथम शताब्दी के अन्त तक आते-आते ईसाइयत को मूर्तिपूजक लोगों पर विजय प्राप्त हुई तथा एक भद्र धर्म के रूप में इसे पहचान और स्वीकार्यता मिली। चर्च के नेताओं के प्रयासों के कारण ईसाइयत ने यहूदी धर्म को पीछे छोड़ दिया। इन नेताओं ने अधिक आकर्षक सिद्धान्तों का निर्माण करने के साथ-साथ मानव-जीवन की आवश्यकताओं की बहुत व्यवस्थित तरीके से व्याख्या की। एपॉसल्स यानी देवदूतों के काल के उपरान्त, ईसाइयों के नेता के रूप में एपॉसलों (Apostles) का स्थान बिशपों ने ले लिया। यह स्थिति कांस्टैण्टाइन के काल तक जारी रही जिसने ईसाइयत को विधिक दर्जा प्रदान किया और जिसे प्रथम ईसाई सम्राट होने का श्रेय प्राप्त है। लेकिन यह थियोडोसियस प्रथम ही था जिसने ईसाइयत (क्रिश्चियनिटी) को एक राज्य-धर्म घोषित किया और तभी से क्रिश्चियनिटी शब्द प्रचलन में आया। जब ईसाइयत ने विधिक प्रस्थिति हासिल कर ली तो चर्च ने प्रशासकों के रूप में प्रान्तों का अधिग्रहण कर लिया और उन्हें धर्मप्रदेशों (Dioceses) का नाम दिया। रोम के बिशप का स्थान सबसे ऊपर हो गया और उन्होंने पोप की उपाधि ग्रहण की। कुछ दुनियावी परिषदें बनायी गयीं जो ईसाई धर्म (क्रिस्टोलोजी) से जुड़े सभी विवादों के लिए उत्तरदायी थीं। ये परिषदें एरियसवाद (Arianism) की निन्दा किया करती थीं जबकि अन्य नेस्टोरियसवाद (Nestorianism) की आलोचना किया करती थीं। इन परिषदों ने कुँवारी मेरी को ईश्वर की माँ (Theotokos) घोषित किया। जबकि चाल्सडन की परिषद ने यह सुझाव दिया कि ईसा के पास दोनों के गुण थे – मनुष्य के भी और ईश्वर के भी। यह भी इंगित किया गया है कि प्रारम्भिक ईसाइयों ने हिब्रू बाइबिल को महत्व प्रदान किया था और इसका उपयोग वे अपने धार्मिक ग्रन्थ के रूप में किया करते थे। प्रारम्भिक ईसाइयों ने ढेर सारे धार्मिक साहित्य के रूप में अपना योगदान दिया; जैसे दृ ईसामसीह की धार्मिक शिक्षाओं पर केन्द्रित न्यू टेस्टामेण्ट का धार्मिक सिद्धान्त, एक्ट्स, एपॉसल लोगों के पत्र और इलहाम या दैवी प्रेरणा (Revelation)। मूसा के नियमों (मोज़ैक लॉ) को आज भी नैतिक उल्लेखों के रूप में माना जाता है जो दस आज्ञाओं (Commandment) पर, महान आज्ञा पर और स्वर्णिम नियम (Golden Rule) पर केन्द्रित है। प्रारम्भ में, ईसाइयों ने कुछ विश्वास और प्रथाएँ स्थापित कीं जिनकी बाद में आलोचना की गयी और उन्हें धर्मविरुद्ध घोषित किया गया। बपतिस्मा यानी ईसाई-दीक्षा (Baptism) की प्रथा इसका एक उदाहरण थी जिसका पालन कुछ यहूदी और जीसस के शिष्य किया करते थे। इस प्रथा में व्यक्ति के मस्तक पर या तो पानी के छींटे डाले जाते थे या फिर व्यक्ति को जल में कुछ देर के लिए डुबा दिया जाता था। यह शुद्धीकरण प्रक्रिया का एक प्रतीक था और इस प्रक्रिया के बाद वह शुद्धीकृत व्यक्ति चर्च में प्रवेश पाने के लिए अधिकृत हो जाता था। इस समारोह को नामकरण-संस्कार भी कहा जाता था और इसे छोटे बच्चों पर भी निष्पादित किया जाता था।

ईसाइयत में उत्पीड़न : उत्पीड़न का तात्पर्य मृत्यु है। रोमन साम्राज्य के काल में यह उत्पीड़न बहुत वृहद पैमाने पर घटित हुआ। सम्राट नीरो ने रोम की विशाल आग के लिए ईसाइयों को जिम्मेदार ठहराया और उसके शासनकाल में सेण्ट पीटर और सेण्ट पॉल जैसे विख्यात लोग शहीद हो गए। कुछ न्यू टेस्टामेण्ट में यह उल्लेख है कि लगभग 250 वर्षों तक ईसाइयों को उत्पीड़न झेलना पड़ा क्योंकि वे रोमन सम्राट की सर्वोच्चता को ईश्वर की तरह मानने से इनकार करते थे। अनेकानेक बाधाओं के बावजूद भूमध्यसागर क्षेत्र के चारों ओर ईसाइयत का फलना-फूलना जारी रहा और इसका परिणाम यह हुआ कि चौथी शताब्दी ईस्वी तक आते-आते ईसाइयत रोमन साम्राज्य का प्रमुख धर्म बन गया।

चर्च : देवदूत-सम्बन्धी युग के उपरान्त नगरीय ईसाई आबादी में से बिशप उभरे और अपने श्रेणीतन्त्र या पदसोपान को उन्होंने एपिसकोपोइ (Episkopoi) अथवा अधिदर्शकों (Overseers), प्रेसबाइतेरोइ (Presbyteroi) अथवा बुजुर्गों (Elders) तथा डायकोनोइ (Diakonoi) अथवा मन्त्रालयी सेवकों के रूप में निर्दिष्ट किया। यह श्रेणीतन्त्र प्रत्येक जगह के लिए एक जैसा नहीं था क्योंकि समय और इलाकों के आधार पर यह परिवर्तित होता रहता था। न्यू टेस्टामेण्ट के लेखकों ने भी ओवरसियर और एल्डर जैसे शब्दों का प्रयोग एक-दूसरे के पर्यायवाची के रूप में किया है। डिडेकेइ (Didache), जिसमें बारह देवदूतों की शिक्षाएँ हैं, में अनेक अवसरों पर बिशपों (bishops) और डीकनों (deacons) की नियक्ति का उल्लेख है। स्वयं ईसाई चर्चों के भीतर भी बिशपों और प्रेसबाइटरों (बुजुर्गों) जैसे चर्च-नेताओं की भूमिकाओं और उत्तरदायित्वों को लेकर विवाद उत्पन्न हो जाया करते थे। कैथोलिक और ऑर्थोडॉक्स जैसे चर्चों ने बैप्टिस्ट (ईसाई दीक्षा-गुरुओं) की जगह पादरी (Priest) शब्द का प्रयोग किया है। हालाँकि सामूहिक चर्चों में "पादरी (Priest)" जैसी उपाधि को मान्यता नहीं प्रदान की गयी। इसकी जगह पर उन्होंने प्रेसबाइटर या एल्डर जैसे शब्दों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। अनेक अवसरों पर ऐसे चर्चों ने अपने संगठन में बिशप की भूमिका को खारिज भी किया। देवदूतों के काल के उपरान्त बिशप लोग देवदूत-सम्बन्धी पिता (Apostolic Fathers) हो गए। ईसाइयत का विकास ज्यों-ज्यों ग्रामीण इलाकों में हुआ, त्यों-त्यों प्रत्येक समुदाय ने प्रेसबाइटरों की नियुक्ति की जिन्हें बाद में पादरी (Priests) कहा गया। डीकनों (deacons) को भी बीमार और गरीब लोगों की देखरेख की कुछ जिम्मेदारियों का कार्यभार सौंपा गया। दूसरी शताब्दी ईस्वी तक देवदूत-सम्बन्धी (Apostolic) उत्तराधिकार के सिद्धान्त स्वीकार कर लिए गए। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत एक बिशप को क्रमानुसार पिछले बिशप का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी बना दिया जाता था। परिणामस्वरूप रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत आने वाले चर्चों के पास सैकड़ों बिशप हो गए जिनका अन्य बिशपों पर क्षेत्राधिकार होता था। येरुशलम प्रथम चर्च का स्थल बना और इसने अपने महत्व को बनाए रखा। नाइसिया (Nicaea) की प्रथम परिषद के दौरान येरुशलम को विशिष्ट सम्मान दिया जाता था किन्तु इसे अपने प्रान्त की राजधानी (मेट्रोपॉलिटन) सम्बन्धी महानगरीय सत्ता प्रदत्त नहीं की गयी। अपनी प्रथम परिषद के केवल पाँच साल बाद ही एक बिजेण्टाइन नगर कांस्टैण्टीनोपल (कुस्तुनतुनिया) अस्तित्व में आया जो प्रारम्भिक ईसाइयत का एक केन्द्र बना क्योंकि यह अनातोलिया के अधिक निकट था।

चर्चों के पिता (फ़ादर) : चर्च के पिता का तात्पर्य ईसाई-धर्म सम्बन्धी (ecclesiastical) लेखकों के एक समूह से है जिनसे सैद्धान्तिक मामलों के सम्बन्ध में प्राधिकारियों द्वारा अपील की गयी थी। चर्च का पिता होने के लिए कुछ पूर्व-शर्तें आवश्यक थीं; जैसे – सिद्धान्त की रूढ़िवादिता (orthodofy), जीवन की पवित्रता और चर्च द्वारा प्राधिकृति आदि। प्रारम्भिक ईसाई लेखन पत्रों के एक समूह के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ये पत्र देवदूत-सम्बन्धी (Apostolic) पिताओं को समर्पित थे, जिनके नाम बार्नाबास के अपीज़ल (Epistle), हर्मस के शेफ़र्ड, क्लीमेण्ट और डिडेकेइ (Didache) के अपीज़ल्स (Epistles) थे। यह समूह

अपनी सादगी और उत्साह के कारण उल्लेखनीय है तथा इस पर यूनानी दर्शन का कोई प्रभाव नहीं दिखता। एण्टियोक के इग्नाशियस ने बिशपों की सत्ता का समर्थन किया था।

विश्राम का समय (sabbath) : विश्राम का समय (sabbath) एक धार्मिक संस्कार है जिसे सप्ताह के किसी भी दिन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यहूदी लोग अपना विश्राम का समय शनिवार को मनाते हैं जबकि ईसाई लोग रविवार को विश्राम के समय का दिन मानते हैं। कहा जाता है कि सम्राट कांस्टैण्टाइन के कारण ही इस संस्कार के दिवस को शनिवार से बदलकर रविवार कर दिया गया था किन्तु ऐसा कहना विवादास्पद है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भिक चर्च विश्राम के समय नामक संस्कार को आवश्यक महत्व नहीं देते थे।

क्रिस्टोलॉजी : अधिकांश ईसाइयों का मानना था कि जीसस एक स्वर्गिक आत्मा थे जिन्होंने एक मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर ईश्वर के अनोखे दूत के रूप में अवतार लिया था। न्यू टेस्टामेण्ट भी जीसस के दैवीय चरित्र का उल्लेख करता है। हालाँकि इस विषय पर एक विद्वतापूर्ण बहस होती रही है कि क्या जीसस को ईश्वर माना जाना चाहिए। जीसस की मृत्यु के पश्चात, जीसस की परम्परा के ही अगले व्यक्ति पॉल ने जीसस को ईश्वर का पुत्र कहा है जो पुनर्जीवित हो उठे थे और स्वर्ग से लौटकर वापस आ गए थे ताकि इस खत्म हो रहे और क्षीण हो रहे विश्व से अपने विश्वसनीय, मृत और जीवित को बचाया जा सके। संयुक्त सिनॉप्टिक शिक्षाओं, मार्क्स (Marks) की शिक्षाओं और जॉन की शिक्षाओं द्वारा भी इसी प्रकार की अवधारणा का प्रचार-प्रसार किया गया। बुक ऑफ़ रिवीलेशन जीसस को अल्फा और ओमेगा के रूप में चित्रित करती है जिसका अर्थ है प्रथम और अन्तिम। इस प्रकार जीसस ही ब्रह्माण्ड का आदि और अन्त दोनों हैं। ब्रह्माण्ड में व्यवस्था या क्रमबद्धता के सिद्धान्त को निर्दिष्ट करने के लिए यूनानी दर्शन में "लोगो (Logo)" शब्द का प्रयोग किया गया है। लोगो (logo) को खारिज करने वाले लोगों को एलोगी कहा गया और इन्होंने जॉन की शिक्षाओं को भी खारिज कर दिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि लोगो को अंगीकार करने वाले लोग इस बात पर सहमत थे कि जीसस एक साधारण मनुष्य की तरह थे तथा वे जोसेफ और मेरी के पुत्र थे और अपने बपतिस्मा, रूप-परिवर्तन और पुनर्जीवन के कारण वे ईश्वर के पुत्र बने।

परलोक-विद्या (Eschatology) : धर्मशास्त्रीय अध्ययन की वह शाखा जो मृत्यु, जगत के अन्त, निर्णय, आत्मा और मानवता की अन्तिम नियति जैसी अन्तिम चीजों से सम्बन्धित होती है, उसे परलोक-विद्या कहा जाता है। परलोक-विद्या के सन्दर्भ ओल्ड टेस्टामेण्ट, न्यू टेस्टामेण्ट, मैथ्यू की शिक्षाओं, सामान्य पत्रों (General epistles), पॉल के पत्रों और बुक ऑफ़ रिवीलेशन में देखे जा सकते हैं।

गिरजा-निर्माणशास्त्र (Ecclesiology) : पहली और दूसरी शताब्दी ईस्वी में ईसाइयों की जनसंख्या बहुत तीव्र गति से बढ़ी। इस आपवादिक वृद्धि ने ईसाइयों को इसके लिए विवश किया कि वे राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण के साथ अपने सम्बन्धों के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन के बारे में सोचें। ईसाइयत के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ उनके भौगोलिक विस्तार के साथ-साथ उनका सामाजिक संजाल भी बढ़ा। इसके कारण कुछ नवीन शिक्षाओं के अंगीकरण की नींव भी पड़ी और देवदूत-सम्बन्धी (apostles) मूल शिक्षाएँ पीछे छूट गयीं। देवदूत-सम्बन्धी शिक्षाएँ धर्मविरुद्ध हो गयीं और इसके कारण स्वयं चर्चों के बीच विवाद का मार्ग खुल गया। प्रारम्भिक कैथोलिकवाद ने गिरजा-निर्माणशास्त्र (Ecclesiology) के रूप में अपना विकास किया और यह चर्च की एकता के विरुद्ध खड़ा हो गया। धर्मविरुद्ध शिक्षा के खिलाफ समाधान अधिक कठोर और मानकीकृत था। बिशपों, एल्डरों और डीकनों को समाहित करते हुए त्रिखण्डीय (tri-partite) चर्च नेतृत्व के रूप में

यह अस्तित्व में आया। अंगीकरण हेतु यह सांगठनिक संरचना एक सार्वभौमिक प्रतिरूप (model) बन गयी तथा कैथोलिक, ऑर्थोडॉक्स और एंग्लिकन जैसे चर्चों ने इस प्रतिमान (पैटर्न) का अनुसरण किया। न्यू टेस्टामेण्ट बिशपों का उल्लेख तो करता है लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि क्या यह धर्मप्रदेशों और बिशपतन्त्र (monepiscopacy) का समर्थन करता है या नहीं। वास्तव में, रोम में अनेक बिशपों का अस्तित्व यह सिद्ध करता है कि इग्नाशियस के समय में बिशपतन्त्र का व्यवहार किया जाता था जो उसकी त्रिखण्डीय संरचना को अन्य चर्चों के सम्बन्ध में प्रभावित करता था।

धार्मिक लेखन : आदिम ईसाइयों ने अनेक धर्मग्रन्थों के रूप में अपना योगदान दिया; जैसे– न्यू टेस्टामेण्ट के धार्मिक सिद्धान्त, जिसने अपने भीतर धार्मिक नियमों सम्बन्धी शिक्षाओं को समाविष्ट कर रखा है, एक्ट्स, देवदूत-सम्बन्धी पत्र और रेवीलेशन (Revelation)। दूसरी शताब्दी ईस्वी के मध्य तक यहूदी और ईसाइयत - दोनों - में धार्मिक साहित्य के लेखन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। न्यू टेस्टामेण्ट के धार्मिक सिद्धान्त का अस्तित्व यह सिद्ध करता है कि परम्पराएँ और विश्वास केवल ओल्ड टेस्टामेण्ट पर ही आधारित नहीं थे। पैगम्बरों को समर्पित कुछ धार्मिक साहित्य, जैसे टोरा भी लिखा गया। धार्मिक सिद्धान्त (केनन) धार्मिक प्रथाओं और विश्वासों के स्रोत भी बने; उदाहरण के लिए, प्रारम्भिक ईसाइयत और यहूदीवाद के विभाजन ने यहूदी धार्मिक सिद्धान्त को जन्म दिया। ईसाइयों द्वारा **सेप्टुआजिंट** (Septuagint) के सिवाय अपने स्वयं के धर्मग्रन्थों को अपनाने के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट सूचना उपलब्ध नहीं है। किन्तु पापियस (Papias) ने यह उल्लेख किया है कि दूसरी शताब्दी ईस्वी तक ईसाई लोगों ने धर्मग्रन्थों की मौखिक परम्परा का पक्ष लेना प्रारम्भ कर दिया था। रोम पर जब यूनानी लोगों का कब्जा हो गया तो हिब्रू धर्मग्रन्थों का यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया। ये बहुत प्रभावशाली अनुवाद थे। प्रोटेस्टैण्ट धर्मसुधार के दौरान अधिकांश ईसाइयों ने सेप्टुआजिंट की उन पुस्तकों को खारिज करना शुरू कर दिया जिनका उल्लेख यहूदी पाठ में नहीं था। इन पुस्तकों को बाइबिल सम्बन्धी धार्मिक सिद्धान्तों का अंग नहीं माना गया। दूसरे शब्दों में इन्हें बिबलिकल एपोक्रिफा घोषित कर दिया गया। न्यू टेस्टामेण्ट की कुछ पुस्तकें भी इसी तरह विवादास्पद रहीं; जैसे – एण्टाइलगोमेना।

9.4 ईसाइयत का प्रसार

प्रारम्भिक ईसाइयत की जड़ें उस यूनानीकृत (Hellenized) रोमन साम्राज्य में मौजूद हैं जिसने धीरे-धीरे सम्पूर्ण पूर्वी अफ्रीका और दक्षिण एशिया को आच्छादित कर लिया था। ईसाई देवदूतों (Apostles) ने येरुशलम को छोड़ दिया और व्यापक यात्राएँ कीं तथा साम्राज्य के आर-पार जाने वाले मार्गों पर स्थित नगरों और क्षेत्रों में नृजातीय समुदायों का गठन किया। देवदूतों (Apostles), व्यापारियों, धर्मोपदेशकों और सैनिकों ने ही ईसाइयत का प्रचार-प्रसार उत्तरी अफ्रीका, एशिया, आर्मेनिया, अल्बानिया, अरब, ग्रीस और अन्य संलग्न भौगोलिक क्षेत्रों में किया था। प्रथम शताब्दी के अन्त तक ईसाइयत का प्रसार ग्रीस और इटली तक हो चुका था। 201 ई. में ओसरोएन (Osroene) को प्रथम ईसाई राज्य घोषित किया गया जबकि आर्मिनिया का राज्य दूसरा ऐसा राज्य बना जिसने 301 ई. में ईसाइयत को अपना आधिकारिक धर्म घोषित किया। आर्मेनियाई एपॉसलिक (Apostolic) चर्च आज भी संसार का सबसे पुराना राष्ट्रीय चर्च है।

इस सम्बन्ध में अनुसन्धानकर्ताओं के मस्तिष्क में अनेक प्रश्न उपजे कि ऐसी कौन-सी चीज थी जिसने ईसाइयत को अन्य धर्मों की तुलना में इतना अधिक सफल और लोकप्रिय बना दिया। कुछ ईसाइयों का मत है कि इसके लिए जिम्मेदार कारक थे : धर्म की सत्यता और

ईश्वर का हस्तक्षेप। कुछ विद्वानों की राय है कि मूर्तिपूजकों पर ईसाइयत इसलिए भारी पड़ी क्योंकि इसने अपने अनुयायियों के जीवन को अनेक दृष्टियों से समुन्नत किया। ईसाइयत ने मृत्यु के बाद पुनर्जीवित होने के सिद्धान्त पर बल दिया, जो यूनानी विश्वास की पारम्परिक प्रणाली से मेल खाता था। इसके अतिरिक्त, ईसाइयत इस प्रक्रिया की व्याख्या करती है कि जब संसार समाप्त होने जा रहा है, तब पुनर्जीवन का यह सिद्धान्त वास्तव में किस प्रकार घटित होगा। अनुसन्धानकर्ताओं का एक वर्ग और भी है जो यह मानता है कि ईसाइयत के प्रसार के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण क्षमा (apologies) और न्यू टेस्टामेण्ट के अनुवाद थे।

बोध प्रश्न 2

1) ईसाइयत क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) "विश्राम के समय (Sabbath)" और "क्रिस्टोलोजी" से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) ईसाइयत के प्रसार पर एक टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

9.5 इस्लामी सभ्यता

छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध अरब में राजनीतिक अशान्ति का साक्षी बना। इस उथल-पुथल में धार्मिक विखण्डन की प्रमुख भूमिका रही; उदाहरण के लिए, यमन में यहूदीवाद प्रमुख धर्म के रूप में फल-फूल रहा था; फारस में ईसाइयत का उभार हुआ और इससे अरब बहुदेववाद का अनुसरण करने की दुविधा में पड़ गया लेकिन भविष्य में प्रस्तुत किए जाने वाले एक नवीन धर्म के अन्य रूप की सम्भावनाएँ अभी भी विद्यमान थीं। इन धर्मों ने समाज को बौद्धिकता और आध्यात्मिकता उपलब्ध करायी थी। इसके अतिरिक्त, कुछ अन्य लोग ऐसे भी थे जो किसी विदेशी विश्वास को अंगीकार करने के लिए अनिच्छुक थे। सम्पूर्ण प्रायद्वीप के आर-पार अरबी भाषा के पुराने मूर्तिपूजा-सम्बन्धी शब्दों को हटाने के लिए यहूदी और

ईसाइयत वहाँ मौजूद थी। कुरैश मक्का का प्रमुख धार्मिक सम्प्रदाय था और उसने पवित्र माह मनाने की प्रथा शुरू की जिसका परिणाम यह हुआ कि सारी हिंसा पर विराम लग गया तथा लोग मक्का में स्थित बहुदेववादी तीर्थस्थल काबा की यात्रा शान्तिपूर्वक करने लगे। काबा एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है जहाँ से नगर के लिए ढेर सारा राजस्व उत्पन्न होता है। परम्परा के अनुसार, यह आकलित किया गया है कि पैगम्बर मुहम्मद का जन्म मक्का में एक कुरैश परिवार में सन् 570 ई. में हुआ था। चालीस वर्ष की अवस्था में उन्हें ईश्वर के शब्द देवदूत गैब्रिएल द्वारा प्राप्त हुए। कुरान में ये शब्द संकलित हैं। उनके सन्देश ने जनता को आकृष्ट किया लेकिन उन्हें मक्का में विरोधी भी मिले। मक्का के उल्लेखनीय लोगों के बढ़ते दबाव के कारण उन्होंने मक्का छोड़ दिया और मदीना (Yathrib) चले गए जहाँ उनके अनुयायियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। यह इस्लामी दौर का प्रारम्भिक काल था जिसे हिजरा कहा जाता है। मदीना (याथ्रिब) में मुहम्मद ने नवीन कुरान के आधार पर एक नए इस्लामी समुदाय की स्थापना की। कानून और धार्मिक प्रथाओं के निर्माण में कुरान ने दिशा और मार्गदर्शन उपलब्ध कराया। धीरे-धीरे मुहम्मद ने मक्का पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया और कुरैश की निष्ठा को सिद्ध कर दिया। उन्होंने उस समय विद्यमान कबीलाई प्रमुखों को विभिन्न समझौतों के लिए बाध्य किया; जैसे – गुटों (एलायंस) का सृजन करना, इस्लामी प्रथाओं का पालन करना तथा सरकार को दान देना। सरकार में इस्लामी सेना, प्रतिनिधि और राजकोष सम्मिलित थे। उनका धर्मोपदेश समाप्त होने के बाद ही कुरान की अन्तिम आयत लिखी गयी। अपने आखिरी उपदेश में उन्होंने मुस्लिमों को आदेश दिया कि वे अली के प्रति अपनी वफादारी दर्शाएँ। उनकी मृत्यु के पश्चात इस्लामी राज्य पर चार खलीफाओं की एक श्रृंखला ने शासन किया जिनके नाम अबू बकर, उमर इब्न अल खत्तब, उसमान इब्न अफ्फान और अली इब्न अबी तालिब हैं। इन नेताओं को "राशिद-उम" नाम से जाना जाता था। इस्लामी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार फारस, सीरिया, लेवंत, मिस्र और उत्तरी अफ्रीका जैसे देशों तक करने में वे सफल रहे।

649 ई. में मुआविया प्रथम, जिसे सीरिया का शासक (गवर्नर) नियुक्त किया गया था, ने नौसेना की अपनी एक टुकड़ी बनायी जिसमें ईसाई, कॉप्ट्स (मिस्र के देशज लोग), सीरियाई ईसाई, नाविक और मुसलमान लोग शामिल थे। इस नौसैनिक टुकड़ी ने सन् 655 ई. में हुई मास्ट की लड़ाई में बिजेण्टाइन लोगों को पराजित किया और इस प्रकार मुसलमानों के लिए भूमध्यसागर का द्वार खोल दिया। युद्धों के दौरान मुस्लिम सेनाएँ मुख्य कस्बे से दूर सैनिक कैम्प में निवास किया करती थीं। परवर्ती काल में ये कैम्प शहरों के रूप में विकसित हो गए। ऐसे शहरों के उदाहरण के रूप में यहाँ इराक के बसरा और कुफा तथा मिस्र के फुस्टैट जैसे कुछ शहरों का नाम लिया जा सकता है। उमर के बाद आने वाले खलीफा उसमान इब्न अफ्फान ने 650 ई. से 656 ई. के बीच कुरान की मानक प्रति लिखे जाने का आदेश दिया और परिणामस्वरूप 650 ई. से 656 ई. के बीच इसे तैयार कर लिया गया ताकि इस्लामी साम्राज्य के विस्तार के लिए विभिन्न केन्द्रों पर इसे भेजा जा सके। 656 ई. में उसमान की हत्या के बाद अली इब्न अबी तालिब अगले खलीफा हुए और अपनी राजधानी को स्थानान्तरित करके वे उसे कुफा (इराक) ले गए। मारवान प्रथम द्वारा उत्पन्न किए गए संघर्ष के कारण पहला गृह युद्ध हुआ जिसे पहला फितना कहा जाता है। सन् 661 ई. में ख्वारिजियों द्वारा अली की हत्या कर दी गयी जबकि मुआविया ने उमय्यद नामक एक राजवंश की स्थापना की और दमिश्क को अपनी राजधानी बनाया। मुहम्मद के एकमात्र जीवित बचे पौत्र हुसैन अली को करबला की लड़ाई में मार डाला गया और इससे दूसरे फितना का दौर शुरू हुआ। हालाँकि मुआविया के अधीन मुस्लिम साम्राज्य का उत्थान जारी रहा और उन्होंने रोड्स, क्रीट, काबुल, बुखारा और समरकन्द तक अपना विस्तार किया। 664 ई. तक अरब सेनाओं ने काबुल को जीत लिया और 665 ई. तक मगरिब (Maghreb) पर विजय हासिल कर ली।

महत्वपूर्ण खलीफा

उमय्यद खलीफा : उमय्यद राजवंश का नाम उमय्या इब्न अब्द शम्स के नाम से लिया गया है जो उमय्यद खलीफा के परदादा थे। उमय्यद खलीफा ने 661 से 750 ई. तक शासन किया था। यह राजवंश मक्का से प्रव्रजन कर गया था और दमिश्क नगर को इसने अपनी राजधानी बनाया। 666 ई. में अब्दुल रहमान की मृत्यु के पश्चात मुआविया प्रथम गद्दी पर बैठा और साम्राज्य में बहुत सारे परिवर्तन किए। यह एक नए परिवार के सत्ता में आने और उसके प्रादुर्भाव का चिन्ह था। उमय्यद के शासन के कारण स्थानीय आबादी, खासतौर पर नए धर्मान्तरित मवाली लोगों में असन्तोष पनपा। इसी बीच अब्बास इब्न अब्द अल मुत्तालिब ने विश्वास हासिल किया और उमय्यद वंश के शासन को समाप्त करके सन् 750 में एक नवीन राजवंश "अब्बासी" की स्थापना की तथा बगदाद को इस नवीन राजवंश की राजधानी बनाया। यह तथ्य है कि उमय्यद राजवंश ने पचास लाख वर्ग मील से भी अधिक भौगोलिक क्षेत्र पर अपना शासन चलाया था। मुआविया द्वित्तीय का शासनकाल दूसरे फितना (गृह युद्ध) का साक्षी बना। बहुत सारी बाधाओं के बावजूद, अपने सारे महत्वपूर्ण दस्तावेजों का अरबी में अनुवाद कराने में वह सफल रहा। मुस्लिम जगत में सबसे पहले उसी ने करेंसी नोट चलाए। अपने शासनकाल में उसने कृषि और वाणिज्य सम्बन्धी गतिविधियों को उन्नत बनाया। मुस्लिम शासन के विस्तार की परम्परा को अब्द-अल-मलिक ने जारी रखा। अरबी को राजभाषा का दर्जा दिया गया और डाक सेवाएँ शुरू की गयीं। अल-वालिद के अधीन इस्लामी जगत का विस्तार मिस्र और कार्थेज तक हुआ तथा यह उत्तरी अफ्रीका के पश्चिमी हिस्से तक पहुँच गया। जबकि तारिक इब्न जियाद ने जिब्राल्टर की जलसन्धि को पार किया और आइबेरियाई प्रायद्वीप को पराजित किया। इस्लामी भूभाग पूर्व दिशा में सिन्धु घाटी तक विस्तृत था। अल वालिब का शासनकाल इसलिए उल्लेखनीय रहा क्योंकि उसी के शासन के दौरान इस्लामी शक्ति अपने चरम पर थी। अल वालिब की मृत्यु के बाद सुलेमान इब्न अब्द अल मलिक खलीफा बना और वह रामल्ला में ही बना रहा। उसने कांस्टैण्टीनोपल (कुस्तुनतुनिया) पर आक्रमण करने के लिए सेनाएँ भेजीं किन्तु इन सेनाओं को भारी नुकसान उठाना पड़ा। 717 ई. में वह मर गया। उमर द्वितीय की मृत्यु के बाद याजिद द्वितीय शासक बना। वह ख्वारिजियों के विरुद्ध लड़ा और उसने ख्वारिजियों के नेता शादाब को मार डाला तथा खिलाफत के भूभाग का विस्तार काकेशस तक किया। याजिद की मृत्यु के बाद हिशम इब्न अब्द अल मलिक सत्ता में आया। उसके शासन को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इन चुनौतियों में, उदाहरण के लिए, बर्बर (Berber) का विद्रोह और जायद इब्न अली का विद्रोह यहाँ उल्लेखनीय हैं। मारवान द्वित्तीय अन्तिम उमय्यद शासक था जिसने अपना शासन दमिश्क से संचालित किया था। उसकी मृत्यु के साथ ही पूर्व दिशा में उमय्यद शासन का अन्त हो गया। अब्बासियों, जिन्होंने क्षेत्र में धीरे-धीरे लोकप्रियता हासिल की थी, ने उमय्यदों का संहार करना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अब्द अल रहमान के सिवाय सारे उमय्यदों को मार डाला गया। अब्द अल रहमान भागकर आइबेरियाई प्रायद्वीप चला गया और उसने वहाँ पर एक राजवंश की स्थापना की।

अब्बासी खलीफा : अब्बासी राजवंश 750 ई. में अस्तित्व में आया। उन्होंने भूमध्यसागरीय क्षेत्र को हराया और सिसिली तक विस्तार किया। उमय्यदों के विरुद्ध जो आक्रोश और असन्तोष व्याप्त था, उसी के कारण अब्बासी अस्तित्व में आए। अब्बासियों के अधीन इस्लामी सभ्यता का स्वर्णिम दौर शुरू होता है। इस दौर में केवल अरबी भाषा के गद्य और कविताओं का विकास हुआ। अल मंसूर, हारुन अल रशीद और अल मामून के शासनकाल के दौरान अब्बासी कला, विज्ञान, वाणिज्य और उद्योग खूब फले-फूले तथा फारस और ट्रांस-ऑक्सियाना की रणनीतिक अवस्थिति को समझते हुए राजधानी को दमिश्क से बगदाद

स्थानान्तरित कर दिया गया। इस समय खिलाफत बिखरी हुई थी और उन्होंने क्षेत्रीय राजवंश स्थापित किए। अगलाबिदों (Aghlabids) को हारुन अल रशीद ने स्वतन्त्र शासकों के रूप में नियुक्त किया था किन्तु उन्होंने बहुत कम समय के लिए ही शासन किया और 909 ई. में शिया फातिमिद राजवंश द्वारा उन्हें हटा दिया गया। फातिमिदों ने अब्बासी मिस्र को परास्त कर दिया और सन् 973 ई. में अल-काहिरा को अपनी राजधानी घोषित कर दिया। फारस में तुर्क गजनवियों ने अब्बासियों से गद्दी छीन ली। चाहे बलपूर्वक या फिर धर्मान्तरण के माध्यम से इस्लाम धर्म का विस्तार जारी रहा। भारत में 1193-1209 ई. तक गंगा नदी तक का क्षेत्र इस्लाम धर्म के भूभाग के अन्तर्गत आ गया था। पश्चिमी अफ्रीका में मुस्लिमों का प्रादुर्भाव सन् 1000 ई. के तुरन्त बाद देखा गया। 1081 से 1097 ई. के बीच मुसलमान शासकों ने कानेम में शासन किया, गाओ में मुसलमान लोग 1007 ई. तक पहुँचे, जबकि माली में तेरहवीं शताब्दी में इस्लामी राज्य की स्थापना की गयी। अब्बासियों ने प्राथमिक रूप से इस्लामी एकता पर बल दिया। मुस्लिम समुदायों के विभिन्न सम्प्रदायों को एक मंच पर लाया गया। अब्बासियों ने उमय्यदों के सामाजिक और नैतिक चरित्र पर प्रहार करना जारी रखा। चार मजहबों (Madhabs) की स्थापना के साथ-साथ शरिया को संहिताबद्ध किया गया। इस काल के दौरान सूफीवाद का उत्थान हुआ और शाही बुखारी के धार्मिक सिद्धान्तों का संग्रह पूर्ण किया गया। इस्लाम में शिया और सुन्नी दो मजहब उभरे, जिन्होंने धर्मशास्त्रीय आधार पर इस्लाम के अनुयायियों को विभाजित कर दिया। यहाँ तक कि फातिमिद (Fatimid) और अयूबिद (Ayyubid) के कालों में भी विभाजन का यह क्रम जारी रहा।

फातिमिद खलीफा : इनका उद्‌भव इफ्रीकिया में हुआ। इफ्रीकिया में आधुनिक ट्यूनीशिया और पूर्वी अल्जीरिया के क्षेत्र सम्मिलित हैं। इस राजवंश की स्थापना मुहम्मद की पुत्री फातिमा अस-जाहरा के नाम पर अब्दुल्ला अल महदी द्वारा सन् 909 ई. में की गयी थी। जैसाकि अधिकांश सुन्नी करते थे, उसी तरह फरामिदों (Faramids) और जायदियों (Zaydis) ने भी हनफी न्यायशास्त्र का ही उपयोग किया। शीघ्र ही, फातिमिद खिलाफत का क्षेत्र केन्द्रीय मगरिब (मोरक्को, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया और लीबिया) तक विस्तृत हो गया और ट्यूनीशिया इसकी राजधानी बनी। इख्शिदीद (Ikhshidid) राजवंश को पराजित करते हुए वे मिस्र में प्रविष्ट हुए और सन् 969 ई. में उन्होंने अल-काहिरा (कैरो) में अपनी राजधानी स्थापित की। मिस्र के बाद फातिमिद लोग सीरिया, सिसिली और दक्षिणी इटली में प्रविष्ट हुए। मिस्र इस राजवंश का केन्द्र बना। मिस्र से ही उत्तरी अफ्रीका, सिसिली, फिलिस्तीन, लेबनान, सीरिया, लाल सागर के तटीय क्षेत्रों, यमन और हेजाज़ के भूभागों पर नियन्त्रण किया जाता था। फातिमिद लोगों ने भूमध्यसागर और हिन्द महासागर में व्यापारिक और वाणिज्यिक गतिविधियों की शुरुआत भी की और बाद में इनका विस्तार चीन तक कर दिया गया।

9.6 प्रमुख साम्राज्य और इस्लामी आन्दोलन

अयूबी (Ayyubid) साम्राज्य : मिस्र में केन्द्रित इस साम्राज्य की स्थापना 1174 ई. में सलादीन ने की थी। अयूबियों ने बारहवीं और तेरहवीं शताब्दियों के दौरान शासन किया था तथा मिस्र, सीरिया, मेसोपोटामिया, हेजाज़, यमन और आधुनिक ट्यूनीशिया तक का भूक्षेत्र इनके अधीन था। 1230 ई. तक सीरिया के अयूबी शासकों ने मिस्र से स्वतन्त्र होने का प्रयास किया, लेकिन असफल रहे। 1250 ई. तक दास रेजीमेण्ट ने मिस्री राजवंश को उखाड़ फेंका। 1260 ई. तक मंगोलों ने अयूबी भूभागों पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

मंगोल आक्रमण : तेरहवीं शताब्दी में मंगोलों ने आक्रमण किया और इस्लाम के स्वर्णिम युग का अन्त कर दिया। चंगेज खान के नेतृत्व में अब्बासियों के दौर को समाप्त कर दिया गया। मंगोलों के आक्रमण के कारण मध्य एशिया का सामाजिक और आर्थिक जीवन दयनीय हो गया। अपने राजवंश का विस्तार उन्होंने मध्य एशिया और फारस तक किया। मंगोलों ने बगदाद को अपना निशाना बनाया जो अब्बासियों की राजधानी थी। सन् 1251 ई. में बगदाद का पतन हो गया और बगदाद के अन्तिम खलीफा को मार डाला गया। अत्याचारियों ने बगदाद नगर को लूटा और नष्ट कर दिया। हालाँकि मिस्री माम्लूक लोगों ने ऐन जलूत (Ain Jalut) की लड़ाई में सन् 1260 ई. तक मंगोल सेना को वापस जाने के लिए विवश कर दिया।

माम्लूक साम्राज्य : 1250 ई. तक दास रेजीमेण्टों ने अयूबी मिस्रियों से गद्दी हासिल कर ली और इस प्रकार माम्लूक साम्राज्य अस्तित्व में आया। सैन्य अभ्यास उनकी मुख्य उपलब्धि थी और इन्हीं सैन्य अभ्यासों के कारण ही उन्होंने मंगोलों को उत्तर-पूर्व के भूभाग छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया। हिम्स की लड़ाई में मंगोल दुबारा पराजित हुए और इस प्रकार माम्लूक सीरिया तक चले गए। सीरिया और मिस्र को एकताबद्ध करने में वे सफल रहे। माम्लूकों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा; जैसे – राजनीतिक अस्थायित्व, सैन्य आक्रमण, आर्थिक दरिद्रता तथा मुस्लिम भूभाग और गैर-मुस्लिम भूभाग के मध्य होने वाले छद्म युद्ध। रूढ़िवादी माम्लूकों ने अनेक धार्मिक इमारतें बनवायीं, विशेषकर मिस्र में मस्जिदें, मदरसे, खानकाहें। इनके प्रमाण प्राचीन काहिरा में आज भी देखे जा सकते हैं।

इस्लामी मंगोल साम्राज्य : उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार, इल्खानेट (Ilkhanate), गोल्डेन हॉर्डे (Golden Horde) और चगताई खानेट (Khanate) ने इस्लाम स्वीकार किया था। इन सबने इल्खानेट शासकों को हटा दिया और तैमूर के नाम से एक नवीन मंगोल शक्ति उभरी। तैमूर ने सन् 1360 ई. में फारस पर आक्रमण किया था। वे दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध भारत तक आ गए और अन्ततः अनातोलिया में ऑटोमन तुर्कों को परास्त कर दिया। समरकन्द नगर में उन्होंने अपनी राजधानी बनायी। चीन में जो प्लेग शुरू हुआ था वह सन् 1347 ई. में सिकन्दरिया (मिस्र) तक पहुँच गया और इसके कारण सम्पूर्ण आबादी के एक-तिहाई हिस्से की मृत्यु हो गयी। युद्ध और प्लेग का दुखद संयोग मध्य-पूर्व के इस्लामी क्षेत्रों के लिए घातक सिद्ध हुआ। अन्ततः तैमूर राजवंश इस्लाम की अनेक शाखाओं में विभाजित हो गया। उदाहरणार्थ, भारत के मुगल उन्हीं में से एक थे।

9.7 इस्लाम का विस्तार

अफ्रीका में इस्लाम : 632 ई. में पैगम्बर मुहम्मद की मृत्यु के बाद उमैय्यदों ने उत्तरी अफ्रीका को पराजित कर दिया। 640 ई. तक अरब लोग मेसोपोटामिया तक फैल चुके थे तथा आर्मेनिया और बिजेण्टाइन सीरिया उनके भूभाग के अन्तर्गत आ चुके थे। दमिश्क उमैय्यद खिलाफत का केन्द्रीय स्थल बना जबकि 641 ई. तक सम्पूर्ण मिस्र अरबों के अधीन आ चुका था।

मगरिब (Maghreb) : मुसलमानों द्वारा स्थापित सबसे पहला नगर कैरोअन (Kairouan) था, जो ट्यूनीशिया में अवस्थित था। अरब सेनापति उक्बा इब्न नफी ने इस नगर की स्थापना की थी और कैरोअन की महान मस्जिद का निर्माण करवाया था। इस्लामी इतिहास के दौरान यह क्षेत्र बहुत स्वतन्त्र था। इदरीस राजवंश, जिसका नाम इसके प्रथम सुल्तान इदरीस प्रथम के नाम पर पड़ा था, ने पश्चिमी मगरिब यानी मोरक्को पर 788 से 985 ई. तक शासन किया। ग्यारहवीं शताब्दी तक, सहारा के अल्मोरावी (Almoravid) राजवंश का

उभार अफ्रीका के उत्तरी-पश्चिमी हिस्से से हो चुका था। मूरी (Moorish) साम्राज्य ने विशाल भूक्षेत्र पर शासन किया जिसमें शामिल थे : दक्षिण में आधुनिक मोरक्को, पश्चिमी सहारा, मॉरितानिया, जिब्राल्टर, अल्जीरिया, आधुनिक सेनेगल और माली; उत्तर में स्पेन और पुर्तगाल। एक अन्य राजवंश, जो अल्मोहाद (Almohad) राजवंश या एकतावादियों (Unitarians) के नाम से जाना जाता था, ने बारहवीं शताब्दी में पाँचवें मूरा (Moorish) राजवंश की स्थापना की तथा अल-अंदालुस के साथ-साथ मिस्र को शामिल करते हुए सम्पूर्ण उत्तरी अफ्रीका पर अधिकार कर लिया।

हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका : हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका में इस्लाम का उभार उतना ही प्राचीन है जितना प्राचीन इस धर्म का इतिहास। लाल सागर और अरब प्रायद्वीप के आसपास रहने वाले व्यापारियों और नाविकों का नए धर्मान्तरित व्यापारी साझेदार मुसलमानों के साथ गहन सम्पर्क स्थापित था। इसी सम्पर्क के कारण वे प्रेरित हुए और इस प्रकार हॉर्न क्षेत्र ने एक नए धर्म का उभार देखा। यह भी महत्वपूर्ण है कि कुरैश से स्वयं को बचाने के लिए इस्लामी शिष्यगण ज़ीला (उत्तरी सोमालिया) चले गए। उन शिष्यों को हॉर्न क्षेत्र के विभिन्न इलाकों में सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराए गए ताकि उनके धर्म को प्रोत्साहन मिल सके। सातवीं शताब्दी में कुरैश लोगों पर मुसलमानों की विजय के कारण स्थानीय व्यापारियों और नाविकों पर अपने अस्तित्व को बचाए रखने का दबाव पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि इन सबने इस्लाम स्वीकार कर लिया तथा भूमध्यसागर और लाल सागर के व्यापारिक मार्ग मुस्लिम खलीफाओं के नियन्त्रण में आ गए। अरब प्रायद्वीप में उथल-पुथल के कारण विशाल पैमाने पर प्रव्रजन हुआ और लोग सोमाली के समुद्र तट पर आ बसे। हॉर्न क्षेत्र में इस्लाम के प्रोत्साहन के लिए इन प्रव्रजनों ने उत्प्रेरक की तरह कार्य किया।

ग्रेट लेक्स : ग्रेट लेक्स क्षेत्र में व्यापारिक अभ्यास के प्रचलन के कारण यह क्षेत्र इस्लाम के आगमन का साक्षी बना। ग्रेट लेक्स के निवासियों ने मुसलमानों के बुनियादी शिष्टाचार और तौर-तरीके मुस्लिम अरबों से सीखे। इस कारण मुस्लिम समुदाय में उनके धर्मान्तरण का मार्ग खुल गया। जायदी (Zayds) लोग भी आप्रवासियों के रूप में ग्रेट लेक्स आ गए थे; इस्लामी प्राधिकारी के रूप में उलेमा का उभार हुआ और कादी को धार्मिक प्राधिकारियों के रूप में स्वीकृति मिली। ग्रेट लेक्स क्षेत्र में इस्लाम धर्म के विकास के मामले में ये मील के कुछ पत्थर हैं।

पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया में इस्लाम : दक्षिण एशियाई देशों, खासतौर पर इण्डोनेशिया में इस्लाम सातवीं शताब्दी में मक्का से आने वाले व्यापारियों के जरिये पहुँचा। यमन के अरब व्यापारी यूरोप और अफ्रीका के स्थलों की यात्राएँ समुद्र के जरिये किया करते थे। अफ्रीका, भारत और अनेक अन्य स्थानों से वे अरबी वस्तुओं के साथ-साथ अन्य वस्तुओं का व्यापार किया करते थे। उनके व्यापार की वस्तुओं में मुख्य रूप से हाथी-दाँत, सोना, मसाले और इत्र शामिल थे। कुछ ऐसे प्रमाण उपलब्ध हैं जो बताते हैं कि अरब व्यापारी हिन्द महासागर से होते हुए श्रीलंका (सीलोन) से भी व्यापार किया करते थे। सूफी मिशनरियों ने अरबी और फारसी के सूफी साहित्य का मलय भाषा में अनुवाद करना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि मलय का झुकाव इस्लाम की तरफ हो गया और अधिकांश निवासी धर्मान्तरित हो गए। व्यापार और वाणिज्य के जरिये इस्लाम की जड़ें बोर्नियो और जावा तक पहुँच गयीं। फिलीपीन्स में इस्लाम का उभार पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ। पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया में तीन महत्वपूर्ण मुस्लिम सल्तनतों का उभार हुआ, जिनके नाम थे : एसेह सल्तनत, जिसका नियन्त्रण दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत के बीच पड़ने वाले भौगोलिक क्षेत्र पर था और सुमात्रा इसका केन्द्र था; मलक्का की सल्तनत, जिसका नियन्त्रण मलय प्रायद्वीप पर था और डेमाक सल्तनत, जिसने जावा में शासन किया था।

भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम : भारत में सबसे पहले इस्लाम केरल में अवतरित हुआ। आख्यानों के मुताबिक, मालाबार तट पर सहाबा का एक समुदाय मौजूद था जो इस्लाम में आस्था रखता था। इसी जगह पर भारत की सबसे पहली मस्जिद का निर्माण करवाया गया था। यह निर्माण चेर राजा चेरामन पेरुमल ने करवाया था जिन्होंने बाद में इस्लाम स्वीकार कर लिया और अपना नाम बदलकर ताजुद्दीन रख लिया। आठवीं शताब्दी तक मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर अधिकार कर लिया था जबकि बारहवीं शताब्दी के दौरान इस्लाम का विस्तार महमूद गजनवी ने किया। कुतुबुद्दीन ऐबक ने सन् 1206 ई. में दिल्ली की गद्दी सँभाली और यह दिल्ली सल्तनत का प्रारम्भिक काल था। चौदहवीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी ने इस्लाम का विस्तार गुजरात, राजस्थान और दकन में किया। तेरहवीं से अठारहवीं शताब्दियों के मध्य भारत में अनेक ऐसे राजवंश हुए जिन्होंने मुस्लिम शासन के विस्तार में अपना योगदान दिया किन्तु इस मामले में मुगल लाजवाब थे। मुगलों ने इस्लाम को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ अनेक प्रभावशाली स्मारकों, बागों, राजत्व-प्रतिमानों और अनेक अन्य रूपों में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया।

बोध प्रश्न 3

1) खलीफा से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) इस्लाम के विस्तार पर एक टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

9.8 सारांश

"बिजेण्टाइन" शब्द की उत्पत्ति बिजेण्टियम शब्द से हुई है जिसका प्रयोग बाइजस नामक व्यक्ति द्वारा स्थापित की गयी एक प्राचीन यूनानी बस्ती को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता था। यह बास्पोरस जलसन्धि के पास यूरोप की तरफ अवस्थित था। बास्पोरस जलसन्धि का प्रयोग एशिया और यूरोप के बीच व्यापार के लिए यातायात के एक महत्वपूर्ण बिन्दु के रूप में किया जाता था। जस्टीनियन प्रथम बिजेण्टाइन साम्राज्य का प्रथम शासक था। उसने 527 ई. से 565 ई. तक शासन किया था। उसके शासनकाल में जस्टीनियन सेना ने पश्चिमी रोमन साम्राज्य के भूक्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। उसका साम्राज्य उत्तरी अफ्रीका तक विस्तृत था। दसवीं शताब्दी के अन्तिम और ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक समय को इतिहासकारों ने बिजेण्टाइन साम्राज्य के स्वर्णकाल के रूप में व्याख्यायित किया है।

इकाई में धर्मयुद्धों के प्रारम्भ, ईसाइयत और इस्लाम के प्रसार पर भी चर्चा की गयी है। यह सत्य है कि इस्लाम का उद्‌भव रेगिस्तान में हुआ लेकिन इसका विकास अरबी संस्कृति में हुआ। इस्लाम में संस्कृति का प्रसारण इनके काव्यात्मक और वर्णनात्मक साहित्य के माध्यम से घटित हुआ। इस साहित्य का इस्लामी सभ्यता पर बहुत गहरा प्रभाव है और इसकी जड़ें शिक्षा को महत्व प्रदान करने में निहित हैं। इस्लाम ने कला और स्थापत्य के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया। मक्का की हरम मस्जिद, येरुशलम में अवस्थित अल-अक्सा की मस्जिद, दमिश्क की महान उमय्यद मस्जिद, इस्तानबुल की नीली मस्जिद और स्पेन की कार्डोबा मस्जिद उन भव्य स्मारकों में शामिल हैं जिन्हें मुस्लिम स्थापत्य की उत्कृष्टतम कृतियाँ माना जाता है। इसके अतिरिक्त, नीले और हरे रंग से चित्रित की गयी प्रभावशाली ज्यामितीय आकृतियाँ (Designs) भी मुस्लिमों के उल्लेखनीय योगदानों में शामिल हैं। "मशराबिया" के रूप में लकड़ी पर की गयी नक्काशी ने कला के क्षेत्र में मुस्लिमों को एक विशिष्ट पहचान दी। मुस्लिमों ने अपनी खोजों का विस्तार संगीत के क्षेत्र में भी किया। उन्होंने नवीन वाद्य-यन्त्रों और ध्वनियों की नयी तकनीकों का विकास किया। उन्होंने गणितीय विज्ञानों के साथ संगीत के सामंजस्य को स्थापित करके उसे समक्रमिक बनाने का भी विकास किया।

9.9 शब्दावली

लटकता हुआ (Pendentive): स्थापत्य पेण्डेण्टिव निर्माण की एक युक्ति है जो आयताकार कमरे के ऊपर दीर्घवृत्ताकार गुम्बद के या वर्गाकार कमरे के ऊपर वृत्ताकार गुम्बद के निर्माण की सुविधा प्रदान करती है।

मूत्र-विश्लेषण (यूरोस्कोपी) : किसी रोगी के मूत्र का देख-परखकर परीक्षण करने का चिकित्सकीय कार्य।

परलोक-विद्या (Eschatology) : धर्मशास्त्रीय अध्ययन की वह शाखा जो मृत्यु, जगत के अन्त, निर्णय, आत्मा और मानवता की अन्तिम नियति जैसी अन्तिम चीजों से सम्बन्धित होती है।

क्रिस्टोलॉजी : अधिकांश ईसाइयों का मानना था कि जीसस एक स्वर्गिक आत्मा थे जिन्होंने एक मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर ईश्वर के अनोखे दूत के रूप में अवतार लिया था।

विश्राम का समय (Sabbath): विश्राम का समय (sabbath) एक धार्मिक संस्कार है जिसे सप्ताह के किसी भी दिन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यहूदी लोग अपना विश्राम का समय शनिवार को मनाते हैं जबकि ईसाई लोग रविवार को विश्राम के समय का दिन मानते हैं।

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 9.2 देखिए।

2) उप-भाग 9.2.3 देखिए।

3) उप-भाग 9.2.4 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 9.3 देखिए।

2) भाग 9.3 देखिए।

3) भाग 9.4 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 9.5 देखिए।

2) भाग 9.7 देखिए।

इस खंड के लिए उपयोगी कुछ पुस्तकें और शोध प्त्र

ए. फारूकी "अर्ली सोशल फॉर्मेशन्स" - मानक, दिल्ली - 2001।

ए.एल. राउज़ "दि यूज़ ऑफ़ हिस्ट्री" - 1971।

कॉलिंगवुड "दि आइडिया ऑफ़ हिस्ट्री" - ऑक्सफोर्ड, 1073।

मेसेल्स "अर्ली सिविलाइजेशंस ऑफ़ दि ओल्ड वर्ल्ड" - बिजनेस बुक्स कम्युनिका, 1978।

निस्बेट "सोशल चेंज एण्ड हिस्ट्री" - ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972।

टी. वाल्टर वालबैंक "सिविलाइजेशंस पास्ट एण्ड प्रेज़ेण्ट" - स्कॉट फोर्समैन, लन्दन, 1978।

प्रेट्जलर, एम. (2007) पॉसेनियस : ट्रैवेल रायटिंग इन एंशियंट ग्रीस; लन्दन : डकवर्थ।

सी. कूपर, जे. फ्लेचर, ए. फियाल, डी. गिल्बर्ट, एस. वानहिल, 2008; टूरिज्म : प्रिंसिपिल्स एण्ड प्रैक्टिस, चौथा संस्करण, प्रैण्टिस हॉल।

फोका, आई. एण्ड वालावानिस, पी. (1999) रीडिस्कवरिंग एंशियंट ग्रीस : आर्कीटेक्चर एण्ड सिटी प्लानिंग, तीसरा संस्करण, एथेन्स : केड्रोस बुक्स।

गेल्डार्ड, आर. जी. (1989) द ट्रैवेलर्स की टू एंशियंट ग्रीस (ए गाइड टू द सैक्रेड प्लेसेज़ ऑफ़ एंशियंट ग्रीस), लन्दन : हर्रप कोलम्बस।

रॉब डेविडसन : टूरिज़्म : लन्दन, 1993।

रॉबर्ट क्रिटी मिल : टूरिज्म सिस्टम : न्यू जर्सी, 1992।

डोनाल्ड लुण्डबर्ग : टूरिस्ट बिजनेस, न्यूयॉर्क, 1990।

डेविड डब्ल्यू. होवेल : पासपोर्ट : ऐन इण्ट्रोडक्शन टू द ट्रैवेल एण्ड टूरिज़्म : ओहायो, 1989।

स्कुलियन, एस. (2007) "पिलग्रिमेज" एण्ड ग्रीक रिलीजन : सैक्रेड एण्ड सेकुलर इन द पागन पोलिस; इन : जे. एल्सनर, एण्ड आई. रदरफोर्ड (सम्पा.), पिलग्रिमेज इन ग्रीको-रोमन एण्ड अर्ली क्रिश्चियन एण्टीक्विटी : सीइंग द गॉड्स (पृ. 111-120); ऑक्सफोर्ड। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

स्टार्क, डी.जे. (2009) रिलीजियस टूरिज्म इन रोमन ग्रीस। थीसिस एण्ड डिजर्टेशंस (कॉम्प्रिहेंसिव)। पेपर 951। ऑनलाइन उपलब्ध : <http://scholars.wlu.ca/cgi/ viewcontent.cgi?article=1950&context=etd.

टाउनर, जे. एण्ड वाल, जी. (1992) हिस्ट्री एण्ड टूरिज्म। एनल्स ऑफ़ टूरिज्म रिसर्च, 18, 71-84।

ब्रानिस्लाव रैबोटिए (2014) स्पेशल-परपज़ ट्रैवेल इन एंशियंट टाइम्स : "टूरिज्म" बिफोर टूरिज्म? पब्लिश्ड इन : एम. स्काकुन (सम्पा.), प्रोसीडिंग्स बुक ऑफ़ द सेकेण्ड बेलग्रेड इण्टरनेशनल टूरिज्म कॉन्फ्रेंस (बीआईटीसीओ 2014): थीमैटिक टूरिज्म इन ए ग्लोबल एनवायरमेण्ट : एडवाण्टेजेज़, चैलेंजेज़ एण्ड फ्यूचर डेवेलपमेण्ट्स (पृ. 99-114)। बेलग्रेड : कॉलेज ऑफ़ टूरिज्म।

ग्राबर्न, एन., एण्ड जाफरी, जे. (1991), इण्ट्रोडक्शन : टूरिज्म एण्ड द सोशल साइंसेज़। एनल्स ऑफ़ टूरिज्म रिसर्च, 18(1), 1-11।

इस खंड के लिए गतिविधियाँ

टिप्पणी : गतिविधियों के परिणामों पर अपने परामर्शदाता (काउंसलर) के साथ चर्चा कीजिए।

गतिविधि 1

अपने कुछ ऐसे मित्रों का पता लगाइए जो कहीं जाकर घूमने की इच्छा रखते हैं। यह जानने की कोशिश कीजिए कि ऐसा करने के पीछे उनका इरादा क्या है और उसके अनुसार कुछ गन्तव्य सुझाइए।

गतिविधि 2

साधारण मानचित्र की सहायता से चीन क्षेत्र का एक पर्यटन मानचित्र तैयार कीजिए।

गतिविधि 3

जहाँ आप रहते हैं, उस इलाके में या आसपास किसी ऐसे स्थल का पता लगाइए जो किसी ऐतिहासिक आकर्षण के कारण प्रसिद्ध हो। उस ऐतिहासिक इलाके में जाने की योजना बनाइए और इस चीज की सूची बनाइए कि वहाँ कौन-कौन से संसाधन और आधारभूत संरचनाएँ उपलब्ध हैं। इसके इतिहास और क्रमागत विकास के बारे में भी सूचनाएँ एकत्रित कीजिए।

गतिविधि 4

इस खण्ड से सम्बन्धित प्राचीन सभ्यताओं को विश्व मानचित्र में स्थान व फैलाव के साथ दर्शायें।

NOTES

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

NOTES